व्यवस्थाविवरण

1 [1] यरदन के पार जंगल में, अराबा, पारान तोपेल के बीच
और लालान हसेरीत और दीजाहाल में इस्राएलियों
से कुछ बातें मूसा ने कहीं। [2] होरेब से कादेशबर्ने तक सेईर
पहाड़ तक पहुँचने में ग्यारह दिन लगते हैं। [3] चालीसवें साल
के ग्यारहवें महीने के पहले दिन याहवे ने मूसा को कुछ निर्देष
दिए थे। वे सब उस ने लोगों को बताया। [4] कहने का मतलब
यह है कि जब मूसा ने एमोरियों के राजा हेशबोन वासी
सीहोन और बाशान के राजा अगतारोत वासी ओग को एद्रेई
में कत्ल किया, [5] उसके बाद यरदन के उस पार मोआब देश में
उस ने नियमशास्त्र (व्यवस्था) को बताया। [6] "हमारे परमेश्वर
याहवे ने होरेब के पास कहा था, तुम इस पहाड़ के पास बहुत
दिनों से रह रहे हो, [7] इसलिए अब समय आ चुका है कि यहाँ
से रवाना हो। मैं चाहता हूँ कि तुम एमोरियों के पहाड़ी देश,
अराबा, नीचे के देश, दक्षिण भाग, समुद्र के किनारे, लबानोन
पहाड़ तक और परात नामक महानद यानि कि कनान तक
चले जाओ। [8] उस देश को मैंने तुम्हारे सामने रखा है। इसी के
बारे में अब्राहम, इसहाक, याकूब और पूर्वजों से मैंने प्रतिज्ञा
की थी, "कि यह मैं तुम्हें और तुम्हारे वंश को दूँगा। अब तुम्हें
जाना है और उसे हथिया लेना है।" [9] उसी समय मैंने यह
भी कहा, तुम्हारी जिम्मेंवारी मैं अकेले नहीं उठा पाऊँगा,
[10] क्योंकि संख्या में तुम आसमान के तारो की तरह हो गए
हो। [11] तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर तुम्हें हज़ार गुणा बढ़ा
दें। तुम उनकी सारी भलाईयों को भी चख सको। [12] लेकिन
तुम्हारे झगड़े-रगड़े और दूसरी जिम्मेंदारियों को संभालना मेरे
लिए असंभव है। [13] इसलिए अपने-अपने गोत्र में से अक्लमन्द,
समझदार और मशहूर लोगों का चुनाव करो। उन के ऊपर
तुम्हें मैं मुखिया ठहराऊँगा। [14] तब तुम बोले, "तुम्हारे कहने
के अनुसार हम करेंगे।" [15] इसलिए मैंने हज़ार-हज़ार, सौ-सौ,
पचास-पचास और दस-दस के ऊपर प्रधान और तुम्हारे गोत्रों
के सरदार भी रखे [16] उस समय तुम्हारे न्यायियों को मैंने
आदेश दिया था, "तुम अपने भाईयों के मुकदमों को निबटाया
करो। यह सब बिना निष्पक्षता के पड़ोसियों और परदेशियों
के साथ करना। [17] बड़ों-छोटों में भेद मत करना, मुँह देखा
इन्साफ़ मत करना। इन्साफ़ परमेश्वर का काम है। जो मुकदमें
मुश्किल हों, उन्हें मेरे पास लाया करना। [18] उसी समय मैंने
तुम्हारी जिम्मेंदारियाँ बता दीं। [19] "हम होरेब से निकलकर
अपने परमेश्वर के कहने के अनुसार अचानक जंगल में से
गुजरे। [20] वहाँ मैंने तुम से कहा, "तुम एमोरियों के पहाड़ी
देश तक आ चुके हो, जिसे हमारे परमेश्वर हमें देने वाले हैं।
[21] इसलिए उस पर चढ़ो और अपने अधिकार में कर लो। तुम
डरो मत और न घबराओ। [22] तभी तुम लोग मेरे पास आए
और कहने लगे, "अपने से पहले हम आदमियों को भेजेंगे। ये
लोग जाँच पड़ताल कर हमें बताएँगे कि हमें कौन से रास्ते
से जाना है। [23] यह बात मुझे अच्छी लगी और मैंने बारह
आदमियों को चुना। पहाड़ पर जाने के बाद एरकोल नाले तक
पहुँचकर उन्हों ने जानकारी ले ली। [24] उस देश के फलों में से वे
लाए और हमें समाचार दिया, "हमारे परमेश्वर जो देश हमें
दे रहे हैं, वह बहुत बढ़िया है।" [26] "फिर भी तुम वहाँ जाना
नहीं चाहते थे और विरोध करते हुए, [27] अपने-अपने तम्बू में
यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे," याहवे की हम से दुश्मनी है। इसी
लिए वह हमें मिस्त्र से निकालकर लाए हैं, ताकि एमोरियों से
हमें मरवा डालें। [28] हम जाएँ तो कहाँ? हमारे भाईयों ने हमें
डरा दिया है कि वहाँ के लोग हमसे बड़े और लम्बे हैं। वहाँ के
शहर बड़ें हैं। उनकी शहरपनाह आकाश चूमती है। हमने वहाँ
अनाकवंशियों को भी देखा है। [29] मैं तुम से बोला, "उनकी
वजह से डरो मत"। [30] जो परमेश्वर तुम्हारी अगुवाई कर रहे
हैं, वही तुम्हारी ओर से लड़ेंगे। मिस्त्र में भी उन्हों ने ऐसा किया
था। [31] तुम्हारा जंगल का भी यह अनुभव था कि जिस तरह
एक पिता अपने बेटे को गोद में उठाए ले चलता है, उसी तरह
हमारे परमेश्वर हमें उठा कर चलते रहे हैं, [32] इसके बावजूद
तुम ने उन पर भरोसा नहीं किया। [33] वह तुम्हारे आगे-आगे
इसलिए चलते रहे कि तुम्हारे ठहरने के लिए जगह ढूँढे। वह
दिन में बादल और रात में आग में प्रगट होकर रहे, ताकि
तुम्हारा मार्गदर्शन करें। [34] लेकिन तुम्हारी वे बातें सुनकर
याहवे का गुस्सा भड़क गया [35] और उन्हों ने यह तय किया कि
इस पीढ़ी में का एक व्यक्ति भी प्रतिज्ञा किए हुए देश को देखने
न पाएगा [36] केवल यपुत्रे का बेटा कालेब उसे देख पाएगा जिस
ज़मीन पर उस ने अपने पैर रखे हैं उसे मैं उसको और उसके
वंश को दूँगा, इसलिए कि पूरे मन से वह मेरी बात मानता
है [37] तुम्हारे कारण मुझ से भी याहवे को गुस्सा आया और
कहा, "तुम भी वहाँ प्रवेश नहीं करोगे। [38] नून का बेटा यहोशू
जो तुम्हारा सेवक है, वह प्रवेश करेगा। इसलिए तुम उसकी
हिम्मत बढ़ाना। वही इस्राएलियों को वहाँ प्रवेश कराएगा
[39] तुम्हारे परिवार जिनके बारे में तुम्हारा ख्याल था कि उन्हें
लोग लूट में ले जाएँगे। यह भी कि ये बच्चे जिन्हें अभी भले बुरे
का ज्ञान नही है, वे वहाँ दाखिल होंगे। उन्हें मैं यह देश दूँगा

और वे उसके अधिकारी होंगे। 40 लेकिन तुम लोग घूमकर चल
पड़ो और लाल समुद्र के रास्ते से जंगल की ओर जाओ 41 तब
तुम कह रहे थे, हमने याहवे के खिलाफ़ गुनाह किया है। हम
अब परमेश्वर के आदेश के अनुसार हमला करेंगे और लड़ेंगे।"
तभी तुम अपने हथियार बाँधकर बिना सोचे-समझे पहाड़ पर
चढ़ने के लिए जोश में आ गए। 42 तब याहवे ने कहा, "उनको
बोलो, कि ऐसा न करें, क्योंकि मैं तुम्हारे बीच में नही हूँ।
इसलिए तुम लोग हार सकते हो 43 मैंने यह कह दिया था,
लेकिन तुम अड़े रहे। 44 वहाँ पहाड़ी एमोरी तुम से मुकाबला
करने निकले और सेईर देश के होर्मा तक तुम्हें मारते-मारते
चले आए 45 लौटने के बाद तुम ने रोना-पीटना मचा दिया,
लेकिन परमेश्वर ने सब अनसुना कर दिया। कादेश में तुम
बहुत दिन तक रहे, यहाँ तक कि एक ज़माना गुजर गया।

2 1 "तब उस आदेश को पाकर जो याहवे से मुझे मिला
था, हम घूम कर चल दिए और लाल समुद्र के रास्ते से
जंगल की ओर गए। हम बहुत दिनों तक सेईर पहाड़ के बाहर
चलते रहे 2,3 फिर याहवे ने मुझ से कहा, "इस पहाड़ के बाहर
चलते-चलते तुम्हें बहुत दिन हो गए हैं अब घूमकर उत्तर की
ओर चलो। 4 इस्राएलियों को तुम यह हुकुम दो, कि वे सेईर के
निवासी अपने भाई एसावियों की सीमा के पास से होकर जाने
वाले हों। वे लोग तुम से डर जाएँगे, इसलिए बहुत सावधान
रहना। 5 उन्हें छेड़ना नही, क्योंकि उन के देश में से मैं तुम्हें
पाँव रखने का स्थान तक न दूँगा। इस कारण कि मैंने सेईर
पहाड़ एसावियों के हाथ में कर दिया हैं। 6 उन से तुम खाना
खरीद कर खा पाओगे और पानी भी खरीद कर पी सकोगे।
7 तुम्हारा याहवे परमेश्वर तुम्हारे हाथों के कामों के बारे में
तुम्हें आशीष देते आए हैं। इस जंगल में तुम्हारे संग तुम्हारे
परमेश्वर रहे हैं और तुम्हें कभी कमी नहीं हुयी है। 8 हम सेईर
के रहने वालों और अपने भाई एसावियों के पास से होते हुए
अराबा के रास्ते और एलत और एस्योनगेबेर से होकर गुज़रे।
9 याहवे का निर्देष यह था कि हम मोआबी लोगों को परेशान
न करें और न ही लड़ाई छेड़ें। मैं उन के देश में से कुछ भी
तुम्हारे अधिकार में न करूँगा क्योंकि मैंने आर को लूनियों के
वंशजों के अधिकार में किया है। 11 वे लोग अनाकियों की तरह
रपाई माने जाते थे। मोआबी उन्हें एमी कहते हैं। 12 प्राचीन
समय में सेईर में होरी लोग रहा करते थे। लेकिन एसावियों ने
उन्हें देश से खदेड़ दिया। उन्हें बर्बाद कर खुद वे वहाँ बस गए।
इसी तरह से इस्राएलियों ने अपने अधिकार के देश में किया
था। 13 अब तुम लोग निकलकर जेरेद नदी को पार करो।
तब हम लोगों ने जेरेद नदी पार की। 14 हमारे कादेशबर्ने को
छोड़ने से लेकर जेरेद नदी पार होने तक अड़तीस साल गुजर
गए। इसी बीच याहवे के शब्द के अनुसार उस पीढ़ी के सभी
फ़ौजी छावनी में से बर्बाद हो गए। 15 जब तक वे बर्बाद न हुए
तब तक याहवे का हाथ उन्हें छावनी में से मार डालने के लिए
उन के खिलाफ़ काम करता रहा 16 जब सभी धीरे-धीरे खत्म
हो गए 17,18 तब याहवे ने कहा, "अब मोआब की सरहद आर
को पार करो, 19 अम्मोनियों के पास पहुँचने पर उन्हें तकलीफ़
मत देना। मैं अम्मोनियों के देश में से तुम्हें कुछ भी न दूँगा,
क्योंकि मैंने पहले ही से उसे लूत के वंशजों के सुपुर्द कर दिया
है 20 उन्हें भी रपाई समझा जाता था, क्योंकि पुराने समयों
में रपाई, जिन्हें अम्मोनी लोग जमजुम्मी कहते थे, वहाँ बसते
थे। 21 वे लोग अनाकियों की तरह ताकतवर कद में ऊँचे और
संख्या में अधिक थे। लेकिन याहवे ने इन को अम्मोनियों के
देखते-देखते, खत्म कर डाला और उन्हों ने उनको उस देश से
खदेड़ दिया और उनकी जगह खुद रहने लगे 22 जिस तरह से
सेईर के रहने वाले एसावियों ने सामने से होरियों को बर्बाद
किया और उन्हों ने उसे निकाल दिया और आज तक उनकी
जगह पर वे स्वयं रहते हैं। 23 इसी तरह अव्वियों को जो अज्जा
नगर तक गाँवों में बसे थे, उनको कप्तोरियों ने जो कप्तोर से
निकले थे, मार डाला और उन के स्थान पर स्वयं रहने लगे।
24 अब तुम लोग यहाँ से चल पड़ो और अर्नोन के नाले के
पार जाओ। हेशबोन के राजा एमोरी सीहोन को तुम्हारे वश
में कर देता हूँ। उस राजा के साथ मुठभेड़ करो और देश को
अपने अधिकार में लाना शुरू कर दी। 25 दुनिया में रहने वाले
सभी लोगों के मन में आज के दिन से डर और घबराहट पैदा
करूँगा। तुम्हारे बारे में सुनकर वे काँप जाएँगे। 26 "इसलिए
मैंने कदेमोत नाम के जंगल से हेशबोन के राजा सीहोन के
पास सन्धि की बात शुरू करने संदेशवाहक भेजे। 27 मुझे अपने
देश में से होकर जाने की अनुमति दे दी। मैं राजपथ से होकर
चला जाऊँगा और इधर-उधर न मुड़ूँगा। 28 तुम पैसा लेकर
मेरे हाथ खाने की चीजें देना और पैसे से ही पानी देना, केवल
मुझे अपने यहाँ से गुजर जाने दो। 29 जिस तरह से सेईर के
निवासी एसावियों ने और आर के निवासी मोआबियों ने मेरे
साथ व्यवहार किया, वैसा तुम भी मेरे साथ करो। इस तरह
मैं यरदन को पारकर उस देश में पहुँच जाऊँगा, जिसे हमारे
परमेश्वर ने हमें दिया है। 30 लेकिन हेशबोन के राजा सीहोन
ने हमें अपने देश में से होकर जाने न दिया, क्योंकि उसका मन
सख्त हो गया था, इसलिए आज वह तुम्हारे आधीन है। 31 मुझ
से याहवे ने कहा, "सुनो, मैं देश समेत सीहोन को तुम्हारे
अधिकार में करने पर हूँ। धीरे-धीरे उस देश को अपने वश में
करते जाओ। 32 तभी सीहोन अपनी फ़ौज लेकर आया। हमला
करने के लिए वह यहस तक आ गया। 33 हमारे परमेश्वर
याहवे ने उसको हमारे द्वारा हरवा दिया। हमने उसके बेटों

और सारी फ़ौज सहित मार डाला। 34 तभी हमने उसके सब
नगरों पर नियंत्रण कर लिया और स्त्रियों-बच्चों तक को नाश
किया 35 उन के जानवरों को हम ने ले लिया और लोगों के
सामान को भी 36 अर्नोन के नाले के छोर वाले अरोएर नगर
से लेकर, गिलाद तक कोई ऐसा नगर ऊँचा न रहा, जो हमारा
सामना कर सकता था, क्योंकि हमारे याहवे परमेश्वर ने सभी
को हमारे अधिकार में कर दिया 37 हम अम्मोनियों के देश के
पास, वरन यब्बोक नदी के उस पार जितना देश फैला है और
पहाड़ी देश के नगर जहाँ जाने से हमारे परमेश्वर याहवे ने
हमें मना किया था, हम नहीं गए।

3 1 "तब हम मुड़े और बाशान के रास्ते से चढ़ गए। बाशान
का राजा आगे अपनी पूरी फ़ौज के साथ हमारा मुकाबला
करने आया ताकि एद्रेई में युद्ध करे। 2 याहवे का वचन मेरे
पास पहुँचा, मत डरो, क्योंकि मैंने उसकी सारी फ़ौज को
देश सहित तुम्हारे हाथ में कर दिया है। जिस तरह से तुम ने
हेशबोन के निवासी एमोरियों के राजा सीहोन से किया है,
वैसा ही उस से भी करना। 3 इस तरह हमारे परमेश्वर याहवे
ने पूरी फ़ौज समेत बाशान के राजाओ को भी हमारे हाथ में
कर दिया। हम उसे यहाँ तक मारते गए कि एक भी न बच
सका। 4 उसी समय हमने उन के सारे नगरों को ले लिया। इसी
प्रकार अर्गोब का पूरा देश जो बाशान में आगे के राज्य में था
और जिस में साठ नगर थे, वह हमारे अधिकार में आ गया 5 ये
सभी नगर मजबूत थे। उनकी ऊँची शहरपनाह, फाटक और
बेड़े थे। इन को छोड़कर कुछ ऐसे शहर थे, जिनकी शहरपनाह
नहीं की थी। 6 जिस तरह हमने हेशबोन के राजा सीहोन के
नगरों से किया था, वैसा ही हम ने इन नगरों से भी किया
7 घरेलू पशुओं और नगरों में जितना सामान था वह ले लिया
8 इस तरह हम ने यर्दन नदी के इस पार रहने वाले एमोरियों
के दोनों राजाओं के हाथ से अर्नोन नाले से लेकर हर्मोन पहाड़
तक के देश को ले लिया (9 हेर्मोन को सीदोन के लोग सियोन
और एमोरी लोग सनीर कहा करते थे।) 10 देश के सभी नगर,
सारह गिलाद, सल्का और एद्रेई तक जो आगे के राज्य के नगर
थे, सारह बाशान हमारे अधिकार में आ गए। 11 जो रपाई
शेष रह गए, उन में से सिर्फ बाशान का राजा आगे बच गया
था। उसकी लोहे की खाट अम्मोनियों के रब्बा नगर में पड़ी
है। उनकी लम्बाई नौ हाथ की और चौड़ाई चार हाथ की
है। 12 अपने अधिकार में लिया गया क्षेत्र यह था - अर्नोन के
नाले के किनारे वाले अरोएर नगर से लेकर सब नगरों सहित
गिलाद के पहाड़ी देश का आधा भाग, जिसे मैंने राबेनियों
और गादियों को दे दिया। 13 गिलाद का शेष भाग, पूरा
बाशान अर्थात् अर्गोब का पूरा देश जो आगे के राज्य में था,
इन को मैंने मनश्शे के आधे गोत्र को दे दिया (बाशान रपाईयों
का इलाका कहलाता है।) 14 मनश्शेई याईर ने गशूरियों और
माकावासियों की सरहद तक अर्गोन का पूरा देश ले लिया।
साथ ही बाशान के नगरों का नाम अपने नाम पर हब्बो याईर
रखा) 15 गिलाद देश मैंने नाकीर को दे दिया 16 रूबेनियों और
गादियों को मैंने गिलाद से लेकर अर्नोन के नाले तक का देश
दे दिया। 17 किन्नेरत से लेकर पिसगा की ढलान के नीचे के
अराबा के ताल तक, जिसे खाटा ताल भी कहते हैं, अराबा
और यरदन के पूर्व की ओर का सारा इलाका भी मैंने उन्हें दे
दिया। 18 "उस समय मैंने आदेश दिया था, "तुम्हारे परमेश्वर
याहवे ने तुम्हें यह देश दिया है कि उसे ले लो। तुम सभी सैनिक
हथियारों से लैस होकर अपने भाई इस्राएलियों के आगे-आगे
चलो 19 लेकिन तुम्हारी स्त्रियाँ, बच्चे और ढेर से जानवर रह
जाएँ। 20 जब याहवे तुम्हारे भाइयों को वैसा आराम दें जैसा
उन्हों ने तुम्हें दिया है और वे उस देश के अधिकारी हो जाएँ,
जो तुम्हारे परमेश्वर याहवे उन्हें यर्दन के पार देते हैं, तभी
तुम भी अपने-अपने अधिकार की ज़मीन, जो मैंने तुम्हें दी
है, लौटोगे। 21 उसी समय मैंने यहोशू को सावधान करते हुए
कहा, "इन दोनों राजाओं के साथ परमेश्वर ने क्या किया,
यह तुम जानते हो। जिनमें तुम पार होकर जाओगे, याहवे
इन सभी राज्यों से करेंगे। 22 तुम उन से डरना नहीं क्योंकि
जो तुम्हारी ओर युद्ध कर रहे हैं वह तुम्हारे परमेश्वर हैं।
23 "तभी मैंने गिड़गिड़ाकर याहवे से प्रार्थना की", 24 हे प्रभु
याहवे, आप अपने दास को अपनी महिमा और शक्तिशाली
दिखा रहे हैं। स्वर्ग या पृथ्वी में कौन ऐसा देवता है जो आप
की तरह काम और पराक्रम दिखा सके 25 इसलिए मुझे पार
जाने की अनुमति दें कि यर्दन नदी के उस पार बढ़िया देश को
अर्थात् उस उत्तम पहाड़ और लबानोन को देख सकूँ। 26 लेकिन
तुम लोगों की वजह से याहवे मुझ से गुस्सा थे। उन्हों ने उत्तर
दिया, "बस करो। इस बारे में तुम मुझ से कभी बात मत
करना। 27 पिसगा पहाड़ की चोटी पर चढ़ जाओ। फिर चारों
दिशाओं की ओर दृष्टि डालो, क्योंकि तुम इस यर्दन नदी के उस
पार न जा सकोगे 28 यहोशू को आदेश दो और उसकी हिम्मत
बँधाओ। वही इन लोगों को आगे-आगे ले जाएगा। जिस देश
को तुम देखोगे यहोशू ही उन लोगों का निज भाग करा देगा।"
29 इसके बाद हम बेतमोर के सामने की घाटी में ठहरे रहे।

4 1 "हे इस्राएल, जो विधियाँ और नियम मैं तुम्हें सिखाना
चाह रहा हूँ, उन्हें ध्यान से सुन कर, वैसा ही करो। यह
तुम्हारे जीवन में मददगार साबित होगा। साथ ही तुम प्रतिज्ञा
किए हुए देश के हकदार हो सकोगे। 2 मेरे दिए निर्देष में कुछ
कम न करना, न ही बढ़ाना। तुम्हारे परमेश्वर की आज्ञा मानते

रहना। 3 बालपोर की पूजा के कारण परमेश्वर ने किस तरह से
लोगों को मार डाला था, 4 लेकिन तुम जो परमेश्वर के साथ
लिपटे रहे, आज तक जीवित हो। 5 परमेश्वर याहवे की आज्ञा
के मुताबिक तुम्हें सारे तौर-तरीके (नियम-आज्ञाएँ) सिखाए
गये हैं, ताकि जिस भूमि के अधिकारी तुम होने वाले हो, उसमें
तुम परमेश्वर की इच्छा में चलो 6 दूसरे पड़ोसी देशों के सामने
तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से दिखायी देगी, अर्थात् वे तुम्हें
परमेश्वर भय में चलते देखकर कहेंगे - निश्चय ये लोग बड़े
बुद्धिमान और समझदार हैं 7 देखो, ऐसा कौन सा बड़ा देश है
जिसका ईश्वर इतने पास रहता हो, जितने पास हमारे याहवे
परमेश्वर हैं? 8 ऐसा कौन सा महान देश है, जिसकी विधियाँ
और आज्ञाएँ इतनी सच्ची और लाभकारी हैं, जैसे याहवे द्वारा
दी गयी हैं। 9 यह ज़रूरी है कि तुम अपने बारे में सावधान
रहो। अपने मन की देखभाल (चौकीदारी) करो। कहीं ऐसा
न हो कि जो जो बातें तुम ने अपनी आँखों से देखी हैं, उन्हें
भूल जाओ। और वे सदा के लिए तुम्हारे मन से चली जाएँ।
लेकिन तुम अपने बच्चों और नाती-पोतों को वह सब सिखाना।
10 मुख्य वह बात सिखाना कि जब तुम होरेब के पास अपने
परमेश्वर के सामने खड़े हुए थे। उस समय याहवे ने मुझ से
कहा था, 'लोगों को मेरे पास इकट्ठे करो ताकि मैं उन्हें वचन
सुनाऊँ। उन के सुनने और सीखने से उनका जीवन पृथ्वी पर
उद्देश्यपूर्ण (लाभकारी) रहेगा। ये बातें उन्हें अपने बच्चों को भी
सिखानी चाहिए। 11 तभी तुम पहाड़ के पास खड़े हो गए। उस
समय वह पहाड़ आग से धधक रहा था। उसकी लपटें आसमान
तक पहुँच रही थीं। पहाड़ के चारों और अँधेरा और बादल
छाए हुए थे। 12 उसी आग के बीच में से याहवे की आवाज़
सुनायी दी। किसी का रूप वहाँ न दिखा, केवल आवाज़ ही
सुनायी पड़ी। 13 अपनी वाचा की दसों बातों को बताकर उन्हों
ने आदेश दिया कि उन्हें माना जाए। उन बातों को परमेश्वर ने
पत्थर की पटियाओं पर लिख भी डाला। 14 उसी समय याहवे
ने मुझे वह सब सिखाने की आज्ञा दी। यह भी उन के इच्छा थी
कि उस नए देश में तुम उनकी मानो। 15 इसलिए तुम्हें अपने
बारे में सावधानी बरतनी है। इसलिए कि होरेब के अनुभव
के समय तुम ने कुछ देखा नहीं था, केवल परमेश्वर ने आग
के बीच से बातचीत की थी। 16,17, 18 तुम गुमराह होकर
किसी जानवर पक्षी पृथ्वी पर रेंगने वाले जन्तु या जल प्राणी
की मूर्ति न बनाना 19 या चाँद, तारों को दण्डवत न करने
लगना न ही उनका गुणानुवाद करना 20 याहवे तुम्हें लोहे
की भट्टी जैसे मिस्र देश से निकाल लाए हैं, ताकि तुम केवल
उनकी प्रजा ठहरो 21 तुम्हारे कारण याहवे ने गुस्से में मुझ से
शपथ खायी थी, कि तुम यरदन के उस पार न जा सकोगे। जो
समृद्ध देश परमेश्वर देते जा रहे हो, उसमें तुम दाखिल न
हो पाओगे 22 मैं तो इसी देश में मरने वाला हूँ। तुम सब तो
उस देश का आनन्द उठाओगे 23 इसलिए ध्यान देना कही तुम
वाचा को भूल न जाना, जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे साथ बाँधा
था। कहीं तुम किसी चीज की मूरत खोदकर न बना लेना,
जिसकी मनाही परमेश्वर ने की है। 24 तुम्हारे परमेश्वर भस्म
कर देने वाली आग हैं। वह जलन रखते हैं। 25 यदि उस देश
में बहुत समय रहते-रहते तुम बिगड़ जाओ और कोई मूर्ति
बनाकर इस बुराई से परमेश्वर को नाखुश करो, 26 तो मैं आज
आसमान-ज़मीन को तुम्हारे खिलाफ़ गवाह रखकर कहता
हूँ, कि जिस देश के अधिकारी होने के लिए तुम यरदन पार
जाने को हो, उसमें अधिक समय न रहोगे। तुम शीघ्र ही बर्बाद
हो जाओगे। 27 याहवे तुम्हें देश-देश के लोगों में बिखेर देंगे।
जिन देशों में तुम्हें याहवे पहुँचाएँगे, वहाँ तुम्हारी गिनती
थोड़ी ही रह जाएगी 28 तुम वहाँ पर लकड़ी और पत्थर के
देवताओं की उपासना करोगे। ये देवता न देखते हैं, न सुनते हैं।
न ही ये खाते हैं और न ही सूँघते हैं। 29 लेकिन यदि तुम वहाँ
भी परमेश्वर के लिए भूख-प्यास रखोगे, तृप्त होगे। लेकिन
इस शर्त पर कि पूरे मन और प्राण से उन्हें चाहो। 30 अन्त
के समय में जब तुम समस्याओं में फँस जाओ, तब तुम अपने
परमेश्वर याहवे की ओर पूरे मन से लौटना और उन्हीं की
मानना। 31 क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर दयालु हैं। वह तुम्हें न ही
छोड़ेंगे और न ही बर्बाद करेंगे। उस वाचा को जो उन्हों ने
पूर्वजों से बान्धी है, उसे वह भूलेंगे नही। 32 जब से परमेश्वर
ने मनुष्य को पैदा किया और पृथ्वी पर रख छोड़ा, तब से
लेकर तुम अपने उत्पन्न होने के दिन तक की बातें पूछो। तुम
आसमान के एक छोर से दूसरे छोर तक की बातें पूछो। क्या
इतनी बड़ी बात कभी हुयी क्या सुनने में आयी है? 33 क्या
कोई लोग कभी परमेश्वर की आवाज़ आग के बीच सुनकर
जीवित रहे होंगे? फिर क्या परमेश्वर ने और किन्हीं लोगों को
दूसरे देश में से निकालते समय कमर बाँधकर परीक्षा, चिन्ह,
अद्‌भुत काम, युद्ध, ताकतवर हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से
ऐसे बड़े भयानक काम किए, जैसे तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारे
सामने मिस्र में किए थे? 35 ये सब कुछ तुम्हें दिखाया गया है,
ताकि तुम यह जान जाओ कि याहवे परमेश्वर को छोड़ और
कोई है ही नहीं। 36 आसमान से तुम्हें वाणी सुनायी गयी थी,
ताकि तुम्हें शिक्षा मिले। पृथ्वी पर आग थी और उस में से
निकलते शब्द। 37 तुम्हारे पूर्वजों के लिए प्रेम के कारण उन के
आने वाले वंश को चुना। अपनी बड़ी शक्ति के द्वारा मिस्र से
इसलिए निकाला, 38 कि तुम से बड़े और सामर्थी लोगों को
तुम्हारे आगे से निकालकर तुम्हें उन के देश पहुँचाए। वहाँ
पहुँचाकर वह भूमि तुम्हारे लिए दे दी थी। 39 इसलिए यह
जान लो कि ऊपर आसमान में और नीचे पृथ्वी पर याहवे ही

परमेश्वर हैं, और कोई नहीं। 40 उन के दिए गए मार्गदर्शन का
सम्मान करना, जिसका बखान मैं आज कर रहा हूँ। तुम्हारा
और तुम्हारे बाद आने वाली पीढ़ियों का भला इसी में होगा
और तुम अपने दिए गए देश में बहुत समय तक रह सकोगे।"
41 मूसा ने यर्दन नदी के पार पूरब की ओर तीन नगर अलग
किए गए। 42 जो बिना जाने-बूझे या बिना नफ़रत से यदि
किसी का खून कर डाले तो इन में से किसी नगर में जा बसे।
43 शबेनियों का बेसेर नगर जो जंगल के समथर देश में हैं और
गादियों के गिलाद का रामोत तथा मनश्शेइयों के बागान का
गोलान" 44 जो नियम-आज्ञाएँ मूसा ने इस्राएलियों को दी वे
यह हैं: 45 यही वे चेतावनियाँ और नियम हैं, जिन्हें मूसा ने
इस्राएलियों को तब दीं, जब वे मिस्र की गुलामी से छूटे थे
46 यर्दन के पार बेतपोर के सामने वाली तराई में एमोरियों
के राजा हेशबोन वासी एमोरियों के राजा सीहोन के देश में,
जिसे मूसा तथा इस्राएलियों ने मिस्र से निकल आने के बाद
मार डाला। 47 इसके बाद उन लोगों ने उसके तथा बाशान
के राजा आगे अर्थात् एमोरियों के दोनों राजाओं के देशों को
अपने वश में कर लिया जो पूर्व की ओर यर्दन नदी के पार थे।
48 अर्थात् अर्नोन की घाटी के तट पर स्थिर अरोएर से सिओन
अर्थात् हेर्मोन पहाड़ तक के क्षेत्र को, 49 और उसके साथ पूर्व में
यर्दन नदी के पार पिसगा की ढलान के नीचे अराना के समुद्र
तक के सारे अराबा को

5 1 सभी इस्राएलियों को मूसा ने बुलवाया और कहा, "जो
विधियाँ और नियम मैं तुम्हें बता रहा हूँ, उन्हें ध्यान से
सुनो। उन्हें सीखना और मानना। 2 हमारे परमेश्वर ने हमारे
साथ होरेब पहाड़ पर वाचा बाँधी थी 3 यह वाचा याहवे ने
मात्र हमारे पूर्वजों से नहीं, लेकिन हम सभी लोगों से बाँधी
थी। 4 पहाड़ उस समय आग से धधक रहा था जब याहवे ने
तुम लोगों से बातचीत की थी। 5 तुम आग से इतना डर गए
थे, कि पहाड़ पर चढ़ने की हिम्मत नहीं की। इसलिए तुम्हारे
और याहवे के बीच मैं खड़ा रहा कि उनकी कही बातों को तुम
तक पहुँचाऊँ। 6 उन्हों ने कहा, "तुम्हारा परमेश्वर याहवे जो
तुम्हें गुलामी के घर या मिस्र में से निकाल लाया है, वह मैं
ही हूँ। 7 तुम मेरे अलावा दूसरों को परमेश्वर करके स्वीकार न
करना। 8 तुम खुद के लिए कोई मूर्ति न बनाना, न ही किसी
वस्तु की प्रतिमा जो आसमान, ज़मीन या पानी में पायी जाती
है, 9 उन के सामने न तो सिर झुकाना, न इबादत करना,
क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर याहवे हूँ जो जलन रखता है। जो
लोग मुझ से दुश्मनी रखते हैं, उन के बेटों, पोतों और परपोतों
तक उन के बापदादों के गुनाह की सज़ा पहुँचती है। 10 मुझ
से जो लोग लगाव (प्रेम) रखते हैं और मेरी कही हुयी बातों
को करते है, उन हज़ारों पर दया बरसाता हूँ। 11 तुम अपने
परमेश्वर याहवे का नाम बेकार में ही न लेना। जो व्यक्ति
याहवे के नाम को बिना मतलब लिया करता है, वह अपराधी
ठहरेगा। 12 'तुम आाम दिन को दूसरे दिनों से अलग (पवित्र)
मानना, जिसको मानने की आज्ञा मुझ ही से मिली है।'
13 अपना सारा काम मेहनत से छैः दिन में करना, 14 सातवाँ
दिन आराम का दिन है। इस दिन तुम, तुम्हारे बेटी-बेटियाँ,
गुलाम जानवर या परदेशी लोग जो तुम्हारे फाटक के अन्दर
हों, आराम करें। 15 हाँ, यह बात याद रहे, कि जिस देश में
तुम लोग गुलाम थे, वहाँ से परमेश्वर याहवे तुम्हें अपनी
ताकतवर बाजुओं से निकाल ले आए थे। 16 अपने माता-पिता
को इज्ज़त देना, जिससे जो देश तुम्हारे परमेश्वर याहवे तुम्हें
देते हैं, उसमें तुम लम्बे अरसे तक रह सको और सुखी भी रहो
17 तुम खून मत करना 18 तुम व्यभिचार मत करना 19 चोरी
से दूर रहना 20 किसी के खिलाफ़ झूठी गवाही से परे रहना
21 तुम किसी की पत्नी, घर, खेत, नौकर चाकर, जानवर या
किसी और वस्तु को पाने की लालसा को मन में बने न रहने
देना। 22 उस पहाड़ पर गहरे अन्धियारे में आग और बादल के
बीच में से ऊँची आवाज़ में ये बातें याहवे परमेश्वर ने कहीं।
पत्थर की तख्तियों पर इन बातों को लिखा और वे तख्तियाँ
मुझे दे दीं। 23 'जब वह पहाड़ आग से धधक रहा था तुम ने
उनकी आवाज़ को सुना। सुनकर तुम और तुम्हारे कबीलों के
सब खास पुरूष और बुज़ुर्ग मेरे निकट आए। 24 वे सभी कहने
लगे, 'हमारे परमेश्वर याहवे ने हम सभी को अपनी रौनक
और महिमा दिखा दी है। हमने आग में से उनकी आवाज़ को
आते भी सुन लिया है। हमने यह नयी बात भी आज सीख
ली है, कि परमेश्वर की आवाज़ सुनने के बावजूद भी इन्सान
ज़िन्दा रहता है। 25 तो अब हम क्यो मरें? क्योंकि ऐसी बड़ी
ज्वाला से तो हम बर्बाद हो जाएँगे। यदि हम अपने परमेश्वर
की वाणी फिर से सुनेंगे तो जीवित नहीं बचेंगे। 26 सभी लोगों
में से कौन हैं वे जो हमारी तरह आग में से परमेश्वर को बोलते
हुए सुनकर बच पाए होंगे 27 इसलिए तुम ही पास जाओ और
परमेश्वर से सुनकर आओ, कि वह क्या चाहते हैं। हम उनका
कहना मानेंगे। 28 'तुम लोग जब ये सब मुझ से कह ही रहे थे,
याहवे सब कुछ सुन रहे थे और उन्हों ने मुझ से कहा, 'इन की
बातों को मैंने स्वयं सुन लिया है और वे ठीक ही कह रहे हैं।
29 कितना अच्छा होगा यदि इन का रवैया हमेशा ऐसा ही
रहे। वह यह कि वे मुझ से डरते हुए मेरा कहना मानते रहें"।
इस तरह से उनका ही फ़ायदा होगा। 30 इसलिए तुम उनको
वापस अपने तम्बुओं में लौटने के लिए कहो। 31 लेकिन तुम
यहीं मेरे पास ठहरो। मैं तुम्हें वे सभी नियम-आज्ञाएँ बताऊँगा,
जो तुम्हें उनको सिखानी होंगी। ये सब बाते उन्हें नए देश में

माननी होंगी। 32 इसलिए तुम इस बात में सावधानी बरतना
कि याहवे परमेश्वर के आदेशों का पालन करो। तुम बाएँ-दाएँ
मत मुड़ना। 33 तुम्हारे याहवे परमेश्वर ने तुम्हें जिस रास्ते पर
चलने को कहा है कि जीवित रहो और तुम्हारा भला हो। यह
भी कि प्रतिज्ञा किए हुए देश में अधिक दिनों तक रह सको।

6 1 "जिस देश में बसने के लिए तुम लोग जा रहे हो, वहाँ
तुम्हें कैसे रहना है, क्या करना है या क्या नहीं, यह सब
सिखाने के लिए परमेश्वर ने मुझ से कहा है। 2 तुम, तुम्हारा
बेटे और पोते, ये सब परमेश्वर का आदर सम्मान करते हुए
बतायी सभी तिथियाँ - आज्ञाओं पर जि़न्दगी भर चलते रहे।
3 हे इस्राएल, सुनो तुम्हारे सावधानी से परमेश्वर की बातों
के पालन से तुम्हारा ही फ़ायदा होगा तुम अपने पूर्वजों के
परमेश्वर याहवे के वायदे के मुताबिक समृद्ध देश में खूब बढ़
जाओगे 4 हे इस्राएलियो ध्यान लगाकर सुनो, हमारे याहवे
परमेश्वर एक ही हैं। 5 तुम अपने पूरे मन, जान और सारी
ताकत से अपने परमेश्वर को प्यार करना। 6 आज दी हुयी
सभी आज्ञाएँ तुम्हारे मन में सदैव रहें। 7 अपने बालबच्चों
को इन्हें सिखाना। घर पर, रास्ते चलते, लेटते, उठते इन के
बारे में बातचीत करना। 8 इन्हें अपने हाथ पर निशान की
तरह बाँधना ये तुम्हारी आँखों के बीच टीके की तरह हों।
9 अपने-अपने घर के चौखट की दोनों और दरवाज़े पर लिखना
10 "तुम्हारे परमेश्वर जब तुम्हें उस देश को पहुँचा दें, जिसके
बारे में उन्हों ने अब्राहम, इसहाक और याकूब से प्रण किया
था। जब वह तुम्हें बड़े-बड़े और अच्छे नगर जिन्हें तुम ने
बसाया नहीं, 11 वे घर जिन्हें तुम ने अच्छी वस्तुओं से नहीं
भरा, जो कुएँ तुम ने नहीं खोदे, जो अंगूर के बगीचे और जैतून
के पेड़ तुम ने नहीं लगाए, ये सब जब तुम्हारे पास हो जाए
और तुम सन्तुष्ट हो जाओ। 12 तब सतर्क रहना, क्योंकि तब
संभावना है याहवे को भूलने की, जो तुम्हें मिस्र की गुलामी से
बाहर निकाल लाए थे। 13 अपने याहवे परमेश्वर से डर कर
अपना जीवन बिताना 14 तुम पराए देवताओं अर्थात् अपने
आस-पास के देश के देवी-देवताओं की उपासना मत करना
15 क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर याहवे जो तुम्हारे बीच में हैं, वह
ईर्ष्या रखते हैं। यदि तुम ध्यान न दोगे, तो वह आग बबूला हो
जाएँगे और वह तुम्हें बर्बाद कर डालेंगे। 16 "जिस तरह से तुम
ने मस्सा में परमेश्वर याहवे को परखा था, फिर मत करना
17 उन के आदेशों चेतावनियों और विधियों को मन लगाकर
पूरा करना। 18 जो याहवे की दृष्टि में सही है, अच्छा है, वही
किया करना। ऐसा करने से तुम्हारी भलाई ही होगी। तभी तुम
उस उत्तम देश को अपने आधीन कर पाओगे, जिसका वायदा
परमेश्वर ने किया था। 19 परमेश्वर के कहने के अनुसार तुम
अपने दुश्मनों को भगा सके थे। 20 "भविष्य में जब तुम्हारा
बेटा तुम से पूछे, कि जिन चेतावनियों, विधियों और नियमों
को परमेश्वर ने दिया है, उनका मतलब क्या है, 21 तब तुम
बेटे से कहना," मिस्र में हम गुलाम थे, लेकिन परमेश्वर ने
अपनी ताकत से हमें निकाला 22 याहवे ने मिस्र, फ़िरौन तथा
उसके पूरे घराने के विरोध में बड़े और भयानक चिन्ह और
अद्भुत काम हमारे देखते किए। 23 जिस भूमि की प्रतिज्ञा
हमारे पूर्वजो से परमेश्वर ने खाई थी, उसे देने के लिए वह
हमें निकाल लाए। 24 इसलिए याहवे ने हमें इन सब बातों को
मानने का हुक्म दिया कि इन के द्वारा हम अपने परमेश्वर की
मानें, जिससे हमारी भलाई सदैव होती रही और हम जीवित
रहे। 25 यदि हम उनकी आज्ञाओं को मानने में सावधानी बरतें,
तो यह हमारे लिए फ़ायदेमन्द होगा।"

7 1 "जब तुम्हारे परमेश्वर याहवे तुम्हें उस देश में जिस में
तुम बसने वाले हो, तुम्हारे देखते-देखते हित्ती, गिर्गाशी,
एमोरी, कनानी, परिज्की, हिब्बी और यबूसी नामक बहुत से
लोगों को जो तुम से अधिक ज़ोरावर थे, निकाल दें। 2 तुम्हारे
परमेश्वर याहवे उनको तुम से हरा दें, तब उन्हें पूरी तरह से
खतम कर देना। तुम उन लोगों से कोई वाचा मत बाँधना और
न ही उन पर तरस खाना 3 अपने बेटे-बेटियों के लिए उन
से वैवाहिक रिश्ते मत बनाना 4 वे लोग तुम्हारे बेटों को मेरे
रास्ते से हटा देंगी। वे अन्य देवताओं की पूजा करवाएँगी। इस
वजह से याहवे का क्रोध तुम पर भड़क जाएगा और बहुत
जल्दी वह तुम्हे बर्बाद कर डालेंगे। 5 तुम उनकी वेदियों और
लाठों को तबाह कर देना। अशेरा देवता की मूर्ति को तोड़
डालना। खुदी मूर्तियों को भी न छोड़ना। 6 तुम लोग अपने
परमेश्वर याहवे के पवित्र लोग हो। दुनिया के सभी लोगों में
से तुम को उन्हों ने अलग किया है। तुम उन्हीं की दौलत हो
। 7 उन्हों ने तुम से प्यार किया और तुम्हें चुन लिया है। तुम्हें
इसलिए नहीं चुना गया कि तुम्हारी संख्या अधिक थी। तुम
लोग गिनती में बहुत नहीं थे, 8 लेकिन परमेश्वर ने तुम से स्नेह
किया और पूर्वजों से की गयी प्रतिज्ञा को पूरा किया। इसलिए
तुम्हें अपने ताकत वाले हाथों से निकाल लाए। उन्हों ने तुम्हें
गुलामी अर्थात् मिस्र और फिरोन के कब्जे से मुक्त किया।
9 इसलिए यह जान लो कि याहवे ही है वह परमेश्वर हैं, जिन
पर भरोसा किया जा सकता है। जो लोग उन से प्रेम रखते हैं
और आज्ञाओं को मानते हैं, उन के साथ वह अपनी वाचा को
पूरा करते है। हज़ार पीढ़ी तक उनकी कृपा बनी रहती है।
10 लेकिन जो लोग परमेश्वर से दुश्मनी रखते है, उन्हें वह
सज़ा देकर बर्बाद कर डालेंगे। अपने दुश्मनों के बारे में वह देर
नहीं करते हैं, लेकिन उन के सामने ही उन्हें बदला दिया जाता

है। 11 इसलिए मेरी दी हुयी आज्ञाओं, विधियों और नियमों
के पालन में सावधानी बरतना 12 इन नियमों पर ध्यान देकर
पालन करने से याहवे परमेश्वर अपनी वाचा और करूणा
को बनाए रखेंगे। इसका वायदा उन्हों ने तुम्हारे पूर्वजों से
किया था। 13 वह तुम से प्रेम रखेंगे, आशीष देंगे और बढ़ाएँगे।
प्रतिज्ञा किए देश में तुम्हारे गर्भ के फल, भूमि के फल, अनाज,
नए दाखरस और तेल पर आशीष देंगे। वह तुम्हारे मवेशियों
और उन के बच्चों को भी बढ़ाएँगे। 14 सब देशों की तुलना में
तुम आशीषित होगे। इन्सान-जानवर या नर-मादा सभी में
कोई बाँझ न होगा। परमेश्वर तुम्हारे बीच में से बीमारी दूर
करेंगे। मिस्र की किसी बीमारी को भी तुम्हारे ऊपर नहीं आने
देंगे। वह इन बीमारियों को तुम्हारे दुश्मनों पर भेजेंगे।

8 1 "मैं तुम्हें जिन आज्ञाओं के बारे में बताता हूँ, उन सभों
को मानने की कोशिश करना। यह अच्छे जीवन और
उन्नति के लिए फ़ायदेमन्द होगा। जिस देश के बारे में याहवे
ने तुम्हारे पूर्वजों से वायदा किया था, उसमें जाकर तुम रह
सकोगे। 2 तुम यह याद रखना कि याहवे तुम्हें जंगल के रास्ते से
चालीस सालों में ले आए ताकि तुम दीन बन जाओ। परमेश्वर
तुम्हें परख रहे थे कि तुम्हारे मन में क्या है और तुम उनकी
आज्ञाओं को मानोगे या नहीं 3 तुम को उन्हों ने नम्र बनाया
और भूख का अनुभव भी दिया। उन्हों ने तुम्हारे बापदादों को
मन्ना खिलाया। वह यह सिखाना चाहते थे कि इन्सान भौतिक
खाने ही से नहीं लेकिन परमेश्वर के मुँह से निकली बात से
ज़िन्दा रहेगा 4 तुम्हारे कपड़े चालीस वर्षों तक पुराने नहीं हुए
थे और न तुम्हारे पाँव ही सूजे। 5 यह बात समझ लो कि जैसे
एक पिता अपने बेटे को डाँट-डपट कर सही दिशा दिखाना
चाहता है, वैसे ही तुम्हारे परमेश्वर याहवे करते हैं। 6 इसलिए
अपने परमेश्वर याहवे की बातों को मानना और उन के बताए
गए रास्ते पर चलना। तुम उन्हीं के डर में जीना। 7 तुम्हारे
परमेश्वर तुम्हें उस बढ़िया देश को ले जा रहे हैं जो नदियों,
तराईयों, पहाड़ों से निकलने वाले गहरे सोतों का देश है। 8 वह
देश गेहूँ, जौ, अंगूर, अंजीर, अनार, जैतून और शहद से भरपूर
देश है। 9 अनाज उस देश में महँगा नहीं मिलेगा। न ही तुम्हें
किसी चीज की कमी होगी। वहाँ के पत्थर लोहे के से सख्त हैं।
वहाँ के पहाड़ों में तांबा पाया जाता है। 10 तुम्हें भर पेट खाना
मिलेगा वहाँ तुम सन्तुष्ट होकर, परमेश्वर के प्रति धन्यवादी
बने रहोगे। 11 तुम बहुत सावधानी बरतना कि कहीं अपने
याहवे परमेश्वर को भूलकर आज्ञाओं-नियमों को मानना न
छोड़ दो। 12 अच्छे-अच्छे घर बनाकर जब तुम खा-पी कर तृप्त
हो जाओ, तब 13 और जानवारों की संख्या बढ़ जाने के साथ
सोना, चाँदी और हर तरह की दौलत बढ़ जाए 14 तब तुम्हारे
मन में घमण्ड आ जाने से तुम परमेश्वर याहवे को भूलकर
मिस्र की गुलामी से छुड़ाने वाले परमेश्वर को भूल जाओं।
15 वह तुम्हें जहरीले साँप-बिच्छू वाले जंगल से और सूखे देश
से जहाँ चट्टान में से उन्हों ने पानी निकाला, 16 तुम्हारे पूर्वज
जिस मन्ना को जानते तक नहीं थे, वह खिलाया। वह तुम्हें
दीन बनाकर और परखकर तुम्हारा ही भला करना चाहते थे,
17 कहीं तुम यह न सोचने लगो कि यह दौलत मेरी ही ताकत
और मेरी ही बुद्धि से मुझे मिली है। 18 अपने परमेश्वर याहवे
को याद रखना, क्योंकि वही तुम्हें धन दौलत हासिल करने की
शक्ति इसलिए देते हैं, ताकि जो वाचा उन्हों ने तुम्हारे पूर्वजों
से बाँधी थी, उसे पूरा करें। 19 यदि तुम अपने परमेश्वर याहवे
को भूलकर दूसरे देवी-देवताओं के पूजा-पाठ में लग जाओगे,
तो तुम ज़रूर बर्बाद हो जाओगे। 20 जिन लोगों को याहवे
तुम्हारे सामने से नाश करने वाले हैं, उन्हीं की तरह तुम भी
अपने परमेश्वर की बातों को न मानने के कारण बर्बाद हो
जाओगे

9 1 "हे इस्त्राएल, कान लगाओ, यरदन नदी तुम इसिलए
पार करने जा रहे हो, ताकि तुम से अधिक ताकत रखने
वाले लोग और जिनके नगरों की ऊँची-ऊँची शहरपनाह है,
उन्हें अपने वश में कर लो। 2 वहाँ ऊँचे कद वाले अनाकवंशी
रहते हैं, जिनका कोई सामना नहीं कर सकता है। 3 इसलिए
आज, तुम यह समझ लो कि भस्म करते जाने वाली आग की
तरह तुम्हारे परमेश्वर याहवे, तुम्हारे साथ नदी पार करेंगे।
वहाँ के लोगों को वही मारेंगे और तब याहवे की वाणी के
अनुसार उनको उस देश से निकालकर बहुत जल्दी बर्बाद कर
डालोगे। 4 परमेश्वर याहवे जब उन्हें, तुम्हारे देखते-देखते
निकाल चुकें, तब यह मत सोचना याहवे तुम्हारी किसी
अच्छाई के कारण तुम्हें यह नया देश दे रहे हैं। सच यह है कि
उन लोगों की बुराई के कारण परमेश्वर उन्हें तुम्हारे सामने से
खदेड़ते हैं। 5 तुम जो उन के देश को अपने वश में करोगे, तो
इसलिए नहीं तुम बहुत गुणी हो। लेकिन इसका कारण यह है
कि उन लोगों के अपराध बहुत हैं। साथ ही में इसलिए क्योंकि
परमेश्वर अपनी उस प्रतिज्ञा को पूरा करना चाहते हैं, जिसे
उन्हों ने अब्राहम, इसहाक और याकूब आदि पूर्वजो से किया
था 6 "तुम लोग ज़िद्दी हो। तुम्हारे भले होने की वजह से तुम्हें
यह बढ़िया देश नहीं मिलेगा 7 यह भी याद रखना, कि जंगल
में तुम लोगों ने परमेश्वर को किस तरह गुस्सा दिलाया था।
मिस्र देश से निकलने के समय से आज तक तुम परमेश्वर का
विरोध ही करते आए हो। 8 होरेब के पास तुम ने याहवे को
गुस्सा दिलाया था और वह तुम्हें वहीं खत्म कर देना चाहते
थे 9 वाचा की पत्थर की तख्तियों को लेने जब मैं पहाड़ पर

चढ़ गया था, तब चालीस रात दिन वहीं रहा था। उन दिनों मैंने न कुछ खाया और न कुछ पिया। 10 याहवे ने अपने हाथ से लिखी पत्थर की दो तख्तियों को मेरे हाथों में दिया। इन में वह सब कुछ लिखा था, जो आग के बीच में से सभा वाले दिन कहा था। 11 चालीस दिन-रात बीत जाने के बाद याहवे ने वे तख्तियों मुझे दी थीं। 12 उन्हों ने मुझ से तुरन्त जाने को भी यह कहते हुए कहा, कि वे लोग सही रास्ते से भटक गए हैं और अपने लिए ढालकर मूर्ति बना ली है। 13 फिर याहवे का कहना यह भी था, मैंने देख लिया है कि ये लोग ज़िद्दी हैं। 14 इसलिए तुम मुझे रोको मत! मैं इस दुनिया में से उनका नामों-निशा मिटा डालूँगा। मैं उन से भी बढ़कर शक्तिशाली लोग तुम से उत्पन्न करूँगा। 15 इसके तुरन्त बाद मैं उल्टे पैर पहाड़ से उतरा। उस समय पहाड़ आग से धधक रहा था। मेरे हाथों में दोनों पत्थर की तख्तियाँ थीं। 16 तुम ने अपने लिए बछड़ा ढालकर बनाया था, जो परमेश्वर की दृष्टि में बड़ा अपराध था। बहुत जल्दी ही तुम बताए गए सच्चे रास्ते से हट गए थे। 17 तुम लोगों के देखते-देखते मैंने गुस्से में आकर दोनों तख्तियों को फेंक दिया। 18 तब तुम्हारे बड़े गुनाह के कारण मैं परमेश्वर के सामने मुँह के बल गिर पड़ा। चालीस दिन-रात मैं निराहार रहा। 19 याहवे परमेश्वर के गुस्से से मैं बहुत डर रहा था। वह तुम से खुश नहीं थे और तुम को मार डालना चाहते थे। लेकिन मेरी बिनती सुन ली गयी 20 याहवे हारून से भी इतना नाराज़ थे कि उसे मार डालना चाहते थे। उसीं वक्त मैंने हारून के लिए भी दोहाई दी। 21 जिस बछड़े को बनाकर तुम ने गुनाह किया था, उसे मैंने आग में डाल दिया। उसे पीसकर मैंने धूल के कणों की तरह कर डाला। उसकी बची राख को पहाड़ से नीचे बहने वाली नदी में फेंक दिया। 22 तुम ने तबेरा, मिस्सा और किब्रात हत्तावा में भी परमेश्वर की जलन को उकसाया था। 23 जब याहवे ने तुम्हे कादेशबर्ने यह कहकर भेजा था कि उस देश को अपने वश में कर लो, तब भी तुम ने विश्वास रखने के बदले विद्रोह किया। 24 जिस दिन से मैं तुम को जानता हूँ, मैंने तुम्हें बलवा करते ही देखा है। 25 इसलिए कि याहवे ने यह इरादा कर लिया था कि वह तुम्हारा नामो-निशां मिटा देंगे, मैं मुँह के बल पड़ा तुम्हारे लिए गिड़गिड़ाता रहा। 26 मेरी प्रार्थना यह थी, "हे मालिक याहवे, यह आपके लोग हैं, जिन्हें आप ने अपनी ताकत से छुड़ाया था, उन्हें बर्बाद मत कीजिए। 27 अपने सेवक अब्राहम, इसहाक और याकूब को याद कीजिए। इन लोगों की कठोरता, दुष्टता और अपराध पर ध्यान मत दीजिए। 28 कहीं ऐसा न हो कि जिस देश से आप हमको निकाल कर लाए हैं, वहाँ के लोग हँस कर कहें, जिस देश को देने का वायदा याहवे ने इन लोगों से किया था, पूरा नहीं कर सका। अवश्य वह उन से दुश्मनी रखता था इसलिए उन्हें मार डाला है। 29 ये सभी लोग तो आपकी प्रजा हैं, और आपके हैं। इन्हें आप बड़े शक्तिशाली हाथ से निकालकर लाए हैं।"

10 1 "याहवे ने मुझ से कहा, "पहली तख्तियों की तरह दो और तख्तियों को लो। लकड़ी का एक बक्सा भी बनवाओ। फिर मेरे पास ऊपर पहाड़ पर आओ। 2 पहले वाली तख्तियों की तरह मैं फिर से वचन लिखूँगा। इन्हें तुम बक्से में रखना 3 बबूल की लकड़ी से सन्दूक बना कर दो तख्तियों के साथ मैं पहाड़ पर चढ़ गया। 4 परमेश्वर ने पहले की तरह दस वचन लिखकर मुझे तख्तियाँ सौंप दीं। 5 पहाड़ से उतरने के बाद मैंने उन तख्तियों को बक्से में रख दिया। 6 इसके बाद इस्राएली लोग याकानियों के कुँओं से निकलकर मोसेरा तक आए 7 वहाँ से वे जो निकले, तो गुदगोदा और गुदगोदा से योतबाता पहुँचे जहाँ नदियाँ हैं। 8 उस समय याहवे ने लेवी कबीले को इसलिए अलग किया, ताकि वे लोग याहवे की वाचा के बक्से को उठाने का काम करें। साथ ही याहवे की उपस्थिति में सेवकाई करें और लोगों को आशीर्वाद दें। 9 लेवियों को भूमि का कोई हिस्सा नहीं मिला था। याहवे स्वयं उन लोगों के हिस्सा थे। 10 पहले की तरह मैं पहाड़ पर चढ़ गया और चालीस रात-दिन गिड़गिड़ाता रहा। परमेश्वर ने प्रार्थना सुनकर तुम्हें नाश करने का इरादा बदल दिया 11 फिर मुझ से याहवे बोले, "उठो और इन का मार्गदर्शन करो। तभी वे प्रतिज्ञा किए हुए देश में अपना अधिकार जमा पाएँगे। 12 अब हे इस्राएलियों, तुम्हारे परमेश्वर याहवे इसके अलावा तुम से और क्या चाहते हैं कि तुम उन से डरो, उन के रास्तों पर चलो और प्रेम रखने के साथ पूरे मन और जान से सेवा करो। 13 तुम को मैं याहवे की जो आज्ञाएँ और नियम बताता हूँ, उसको अपनाओ, इसी में तुम्हारी भलाई है। 14 सब से ऊँचा स्वर्ग और इस पृथ्वी में जो कुछ भी है, वह सब तुम्हारे याहवे परमेश्वर ही का है। 15 फिर याहवे ने तुम्हारे पूर्वजों से गहरा प्यार किया। उन्हें और तुम्हें दुनिया के तमाम लोगों में से चुन लिया। 16 इसलिए अपने-अपने मन का बदलाव करो और ज़िद्दी न रहो। 17 तुम्हारे परमेश्वर याहवे, ईश्वरों के परमेश्वर और प्रभुओं के प्रभु हैं। वह महान, पराक्रमी और डर के योग्य है। वहाँ न ही पक्षपात करते है और न घूस लेते है। 18 वह अनाथ और विधवा के साथ इन्साफ़ करते हैं और परदेशी लोगों को खाना कपड़ा देकर अपना प्रेम प्रगट करते हैं। 19 इसलिए दूसरे देश से आए व्यक्ति को अपना प्रेम दिखाओ, क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे। 20 तुम अपने याहवे परमेश्वर से डरना। उन्हीं की सेवा करते रहना, उन्हीं से लिपटे रहना और उन के नाम की शपथ खाना। 21 वह तुम्हारी स्तुति के लायक

हैं और तुम्हारे परमेश्वर हैं उन्हों ने ही ऐेसे बड़े काम किए हैं,
जिन्हें तुम सभी ने देखा है। 22 मिस्र में जाने के समय तुम्हारे
पूर्वज संख्या में सत्तर थे। अब तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारी
संख्या आसमान के तारों की तरह अनगिनित कर दी है।

11 1 "इसलिए तुम लोग अपने परमेश्वर याहवे से खूब
मोहब्बत रखना। जो विधियाँ, नियम और आज्ञाएँ
उन्हों ने तुम्हें दी हैं, उन सभी को मानना। 2 तुम लोग यह
जान लो (तुम्हारे बच्चों से मैं यह नहीं कह रहा हूँ)। वे लोग तो
सभी बातों से अनजान हैं कि किस तरह परमेश्वर ने तुम्हें
अनुशासित किया और अपनी शक्ति से छुड़ाकर अपनी महिमा
की 3 मिस्र में राजा के सामने चिन्ह दिखाए, अजीब काम
किए। 4 तुम्हारा पीछा करने वाले मिस्र की सेना के घोड़ों
और रथों को सवार सहित पानी में डुबो दिया 5 तुम्हारे इस
जगह तक पहुँचने तक और क्या-क्या किया? 6 उन्हों ने रूबेनी
एलीआब के बेटे दातान और अबीराम के साथ कैसा बर्ताव
किया - उन लोगों के परिवार नौकर-चाकर आदि इस्राएलियों
के देखते-देखते ज़मीन में समा गए थे। 7 लेकिन तुम ने याहवे
के इन बड़े-बड़े कामों को खुद देखा है। 8 इस कारण जितनी
आज्ञाएँ तुम्हें मैं आज सुना रहा हूँ, वैसे ही करना। यदि ऐसा
करोगे तो ताकतवर होकर प्रतिज्ञा किए हुए देश को अपने
काबू में कर लोगे। 9 तभी तुम ज़्यादा समय तक वहाँ रह सकोगे
जो बहुतायत का देश है और जिसका वायदा पहले ही से किया
जा चुका है। 10 मिस्र में तुम बीज बोते थे, साग-पात बोते थे,
लेकिन सिंचाई के लिए पाँव से नालियाँ बनाते थे 11 लेकिन
यह नया देश पहाड़ों और तराईयों का देश है। आसमान की
बारिश से यहाँ सिंचाई होती है। 12 इस देश पर परमेश्वर की
निगाह है। साल के आरम्भ से अन्त तक परमेश्वर को इसका
ख्याल रहता है। 13 यदि तुम मेरी बातों को ध्यान से सुनकर
अपने पूरे मन और प्राण से परमेश्वर से प्रेम करो और सेवा
करो, 14 तो तुम्हारे देश में शुरूआती और आखिरी बरसात
तुम्हें समय पर मिलने से फ़सल अच्छी होगी और तुम अनाज/
दाखमधु और तेल इकट्ठा कर पाओगे। 15 मैदान में तुम्हारे
जानवरों के लिए मैं घास दूँगा। तुम स्वयं भी भोजन से तृप्त हो
जाओगे। 16 इसलिए खुद के बारे में सावधान रहना, कि मन
धोखा न खा जाए और बहक कर तुम दूसरे देवी-देवताओं की
पूजा करने लगो। 17 और याहवे परमेश्वर तुम से नाराज होकर
आकाश से वर्षा बन्द कर दें, और ज़मीन से कुछ न उपजे। इस
कारणवश तुम वहाँ भूखे मर सकते हो, 18 इसलिए अब मेरी
ये बातें अपने मन और प्राण में रखो और चिन्ह के रूप में अपने
हाथों पर बान्धना। ये बातें तुम्हारी आँखो के बीच में टीके का
काम करें। 19 घर में उठते-बैठते, बाहर चलते फिरते ये बातें
तुम अपने बच्चों को सिखाया करना 20 अपने घर के दरवाज़े
के चौखट और बाएँ-दाएँ, दोनों ओर इन्हें लिख देना 21 ताकि
प्रतिज्ञा किए हुद देश में तुम और तुम्हारे बच्चों की उम्र अधिक
हो। वे आकाश और पृथ्वी जब तक हैं, तब तक बने रहें।
22 इसलिए यदि तुम इन सभी आज्ञाओं के मानने में सावधानी
बरतो, परमेश्वर का सम्मान करो, उन के बताए गए रास्तों
पर चलने के साथ उन से लिपटे रहो, 23 तो याहवे उन देशों
के लोगों को तुम्हारे देखते-देखते निकाल देंगे। तुम अपने से
बड़ों और सामर्थी लोगों के अधिकारी हो जाओगे। 24 जंगल से
लबानोन तक जहाँ कहीं तुम्हारे पाँव पड़ेंगे, वे सभी तुम्हारे
हो जाएँगे। जंगले से लबानोन और परात महानद से लेकर
पश्चिम के समुद्र तक तुम्हारी सरहद होगी। 25 कोई तुम्हारा
मुकाबला नहीं कर पाएगा। जहाँ-जहाँ तुम्हारे पाव पड़ेंगे,
वहाँ के लोगों के मन में तुम्हारे कारण डर उत्पन्न हो जाएगा।
26 "सुनो, तुम्हारे सामने आज मैं आशीष और शाप दोनों ही
रख रहा हूँ 27 यदि तुम दी गयी आज्ञाओं का पालन करोगे तो
तुम्हारा भला होगा, 28 यदि तुम आज्ञाओं को मानने के बजाए
दूसरे देवी-देवताओं का पूजा-पाठ करोगे तो तुम को सज़ा
मिलेगी। 29 जब तुम प्रतिज्ञा किए हुए देश को प्राप्त कर लो तब
गरिज्जीम पहाड़ से आशीर्वाद और दण्ड की बातें एबाल पहाड़
से सुनाना 30 क्या वे यर्दन के उस पार पश्चिम में, अराबा के
रहने वाले कनानियों के देश में, गिलगाल के सामने मोरे के
बांज पेड़ों के पास नहीं हैं? 31 तुम यर्दन नदी के पार इसलिए
जाओगे ताकि वायदा किए हुए देश में जाकर रहो 32 इसलिए
सुनाए गए नियमों-आज्ञाओं को मानने में सावधानी बरतना।

12 1 "जिस देश को देने का वचन परमेश्वर ने तुम्हें
दिया था, उसमें अन्त तक इन नियमों-आज्ञाओं
को मानना। 2 तुम जिन लोगों के अधिकारी बनोगे उसके
लोग ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों, टीलों हरे पेड़ के नीचे, जहाँ-जहाँ
देवी-देवताओं की उपासना करते हैं, तुम उन्हें तोड़ डालना।
3 वेदियों को गिरा देना, लोग को नष्ट कर देना, अशेरा
की मूर्तियों को ऐसा काट फेंकना, कि उस देश से उनका
नामो-निशा मिट जाए। 4 उन के जैसे काम मत करना 5 सभी
गोत्रों में से जिस जगह को तुम्हारे परमेश्वर चुने, वहीं जाया
करना 6 वहाँ तुम होमबलि, मेलबलि, दशमांश, ली हुयी
भेटें और मन्नत की चीजों, स्वेच्छाबलि, गाय-बैलों और भेड़
बकरियों के पहलौठे ले जाया करना। 7 तुम वहीं खाना-खाना
और अपने-अपने परिवार सहित उन सभी कामों पर, जिनमें
तुम ने हाथ लगाया हो, और जिन पर याहवे परमेश्वर का
आशीर्वाद रहा हो, खुश होना। 8 आजकल यहाँ जो कुछ
जिसको पसन्द आता है वही करता है, तुम ऐसा न करना,

9 जो जगह प्रभु परमेश्वर तुम्हे देना चाहते हैं, तुम अभी तक
वहाँ नही पहुँचे हो. 10 लेकिन जब तुम वहाँ जाकर बस जाओ
और तुम्हें चारों ओर से शान्ति मिले, 11 और तुम बिना डर के
रहने लगो, तब परमेश्वर की आराधना की जगह तुम अपने
होमबलि, मेलबलि, दशमांश, उठायी गयी भेटें और मन्नतों
की वस्तुएँ वहीं लाया करना 12 अपने बच्चों और नौकर-चाकर
(दास-दासी) आदि के साथ तुम वहाँ खुशी मनाना। जो लेवीय
तुम्हारे फ़ाटकों के अन्दर हों वह भी तुम्हारे साथ खुशी मनाएँ,
क्योंकि तुम्हारे साथ उसका कोई अपना हिस्सा नहीं होगा।
13 तुम सावधान ज़रूर रहना कि अपनी होमबलियों को कहीं
भी अर्पित न कर दो 14 तुम्हारे जिस गोत्र में भी जगह निश्चित
की जाए, वहीं अपनी होमबलियों को चढ़ाया करना। जो
भी आज्ञा तुम्हें दी जा रही है, उसे मानना 15 "लेकिन तुम
अपने फ़ाटकों के अन्दर अपनी मर्ज़ी से परमेश्वर की आशीष
के अनुसार पशु मारकर खा सकोगे। शुद्ध और अशुद्ध दोनों
ही प्रकार के व्यक्ति खा सकेंगे, जैसे कि चिकारे और हिरन के
मांस। 16 लेकिन उसका खून मत खाना। उसे पानी की तरह
ज़मीन पर उण्डेल देना 17 अपने अनाज, नए दाखमधु, टटके
तेल का दशमांश, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों के पहलौठे, मन्नत
की कोई वस्तु और स्वेच्छाबलि और उठायी हुयी भेटें अपने के
अन्दर ही खाना 18 परमेश्वर की चुनी हुयी जगह ही पर सब
के साथ खाते हुए आनन्द मनाना 19 जब तक तुम जीवित हो,
लेवियों को भूलना नही। 20 जब तुम्हारे परमेश्वर याहवे अपने
कहने के अनुसार तुम्हारे देश को बढ़ाएँ और तुम्हारा मन
गोश्त खाने का हो और तुम गोश्त खाने की सोचने लगो, तो
जो चाहे, खा लेना। 21 परमेश्वर का स्थान यदि तुम्हारे यहाँ
से दूर हों, तो जो तुम्हारे पास जानवर हों, उसमें से कोई भी
मारकर अपने फाटकों के अन्दर ही खा सकोगे। 22 जिस तरह
से चिकारे और हिरण का मांस खाते हैं, वैसे ही उसका मांस
भी खाया जा सकेगा। व्यक्ति जो शुद्ध है या अशुद्ध, उसे खा
पाएगा। 23 लेकिन तुम उनका खून मत खाना। खून में जान है
इसलिए मांस के साथ खून कभी भी न खाया जाए। 24 खून को
ज़मीन पर डाल देना। 25 जो बातें याहवे की निगाह में सही है,
उन्हें करने से तुम्हारा और तुम्हारे वंश का भला होगा। 26 तुम
जब कभी कोई चीज अलग (पवित्र) करो या मन्नत मानों,
तो वस्तु को वहीं ले जाओ, जो परमेश्वर की चुनी जगह है,
27 वहीं अपने होमबलियो के मांस, खून दोनों ही को याहवे
की वेदी पर चढ़ाना। मेलबलियों का रक्त उसकी वेदी पर
डालकर उनका मांस खाना। 28 इन बातों को जो तुम्हें सुनायी
जा रही हैं, यदि तुम सुनकर जो परमेश्वर की दृष्टि में जो ठीक
है, वही करो, तो लाभ तुम्हें तो होएगा ही, साथ आने वाली
पीढ़ी को भी। 29 "जब तुम्हारे परमेश्वर याहवे उन देशों के
लोगों को जिनके तुम अधिकारी होने वाले हो, तुम्हारी आँखों
के सामने बर्बाद करें और तुम उन के अधिकारी बनकर उन
के देश में रहने लगो, 30 तुम उस समय सतर्क हो जाना, कि
उन के समाप्त होने के बाद तुम भी उनकी तरह फँस जाओ।
कहने का मतलब यह है कि उन के व देवी-देवताओं के बारे में
यह जानकारी हासिल करने का प्रयत्न नहीं करना, कि उनकी
पूजा-पाठ की रीति-विधि क्या है। 31 तुम अपने परमेश्वर
याहवे से ऐसा बर्ताव मत करना, क्योंकि जितने कामों से उन्हें
नफ़रत है, उन सभी को इन लोगों ने किया है। इस सीमा
तक कि अपने बेटे-बेटियों की कुर्बानी चढ़ाते हैं। 32 "जितनी
आज्ञाओं को मैं दे रहा हूँ उन्हें बहुत बारीकी से मानना। उनमें
से किसी को न बढ़ाना और न किसी में से कुछ घटाना

13 1 "यदि तुम्हारे बीच रहने वाला कोई व्यक्ति नबी
या स्वप्न देखने वाला कोई चिन्ह या अद्भुत काम
दिखाए 2 और चिन्ह या अद्भुत काम को सबूत ठहराकर वह
तुम से कहे, आओ हम दूसरे देवी-देवताओं के मानने वाले बन
जाएँ, जिन्हे हम जानते भी नही थे।" 3 तब तुम उस नबी
या स्वप्न देखने वाले की बात पर कान न लगाना, क्योंकि
तुम्हारे परमेश्वर याहवे तुम्हें परखेंगे। यह जानने के लिए
तुम लोग पूरे मन और प्राण से उन से प्रेम रखते हो या नही।
4 अपने परमेश्वर के बताए गए रास्ते पर चलते जाना, उन से
डरना और आज्ञाओं को मानना। तुम उनकी सेवा (आराधना)
करना और उन्हीं से लिपटे रहना 5 यदि स्वप्न देखने वाला या
भविष्यवक्ता तुम को गुलामी से मुक्त करने वाले परमेश्वर के
विरोध में कर दे, तो वह मार डाला जाए। इस तरह अपने
बीच में से बुराई दूर करना। 6 "यदि तुम्हारा सगा भाई,
बेटा, बेटी तुम्हारी पत्नी या जान से प्यारा कोई दोस्त यह
कहकर फुसलाए, कि हम दूसरे देवी-देवताओं की पूजा करें 7 ये
देवी-देवता तुम्हारे नज़दीक रहने वालों के या दूर रहने वालों
के हो सकते हैं, 8 लेकिन तुम उनकी मत सुनना, न ही तरस
खाना या कोमलता दिखाना न ही उसे छुपाना 9 उसे जान से
मार डालना। मार डालने में पहल तुम करना, बाद में दूसरे
हमला बोलें। 10 उस पर इस तरह से पत्थर फेकें जाएँ कि वह
मर जाए। उस ने तुम को तुम्हारे छुड़ाने वाले परमेश्वर से तुम्हें
दूर करने की कोशिश की है 11 सभी इस्त्राएली यह देखकर
डर जाएँगे और ऐसा काम तुम्हारे मध्य कोई भी नही करेगा।
12 यदि तुम्हारे किसी नगर के बारे में यह सुनने को मिले 13 कि
तुम्हारे ही कुछ लोगों ने अपने नगर के लोगों को यह कहकर
बहकाया कि, "आओ, हम नए देवी-देवताओं की पूजा करें,
14 तो पूछताछ करके पता लगाना कि यह बात कितनी सच है,
क्योंकि तुम्हारे बीच यह घिनौना काम नहीं, 15 तब उस नगर

के लोगों को ज़रूर मार डालना। यहाँ तक कि वहाँ के जानवरों को भी खत्म कर डालना 16 उस नगर के सारे सामान को चौराहे पर इकट्ठा करके जला डालना। वह नगर उसके बाद न बसाया जाए। 17 बर्बाद की हुयी कोई वस्तु तुम न लेना। ऐसा करने पर परमेश्वर का गुस्सा शान्त हो जाएगा। परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार तुम पर मेहरबान होंगे और तुम्हारी संख्या बढ़ाएँगे। 18 यह सब तभी होगा जब तुम सभी बातों को मानोगे और परमेश्वर की आँखों में जो सही है, करोगे।

14 1 तुम अपने परमेश्वर याहवे की औलाद हो। इसलिए मरे हुओं के लिए न तो अपनी देह को चीरना न भौहों के बाल मुढ़ाना 2 परमेश्वर के लिए तुम एक पवित्र समाज हो। अपनी खुद की दौलत होने के लिए परमेश्वर ने तुम्हें चुन लिया है। 3 तुम किसी भी तरह की घिनौनी चीज़ मत खाना 4 जो जानवर तुम खा सकते हो, वे ये हैं - गाय-बैल, भेड़-बकरी। 5 हिरन, चिकारा, मृग, बनैली बकरी, सांभर, नीलगाय और बनैली भेड़। 6 फटे खुर वाले और पागुर करने वाले जानवरों का मांस तुम खा सकते हो। 7 लेकिन पागुर करने वाले और चिरे खुर वालों में से ऊँट, खरहा और शापान मत खाना। ये पागुर तो करते हैं, लेकिन इन के खुर चिरे हुए नहीं हैं। इसलिए तुम्हारे खाने लायक ये नहीं है। 8 सूअर चिरे खुर का तो है, लेकिन पागुर नहीं करता इसलिए तुम्हारे लिए लाभदायक नहीं है। न ही इन्हें खाना और न ही इनकी लाश को छूना। 9 पानी के जीव, जिनके छिलके और पंख है, उन्हें खाया जा सकता है। 10 बिना पंख और बिना छिलके वाले तुम्हारे खाने लायक नहीं है। 11 सभी चिड़ियों का मांस खाया जा सकता है। 12 लेकिन उकाब, हड्फोड़, कुरर, 13 गरूड, चील, शाही, 14,15 कौए, शुतमुर्ग, तहमास, जलकुक्कुट और बाज 16,17 छोटा और बड़ा उल्लू, घुग्घुस, घनेग, गिद्ध, हाड़गील, 18 सारस, बगले, हुदहुद और चमगादड़ 19 जितने रेंगनेवाले प्राणी हैं, वे सभी खाने के हिसाब से अशुद्ध हैं। 20 सभी शुद्ध पंख वाले पक्षी खाए जा सकते हैं। 21 अपनी मौत से मर जाने वाले पक्षी को न खाया जाए। तुम्हारे फाटकों के अन्दर का कोई परदेशी उसे खा सकता है या पराए व्यक्ति को बेचा जा सकता है। लेकिन तुम अपने परमेश्वर के लिए पवित्र समाज हो। बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न पकाना 22 तुम्हारी फ़सल में से बीज का दसवा हिस्सा अलग रखना 23 जिस जगह को तुम्हारे परमेश्वर अपनी उपासना के लिए चुनें, वहीं अपना अनाज, दाखमधु,, टटके तेल का दसवां भाग, गाय-बैल. भेड़ बकरियों के पहलौठों को खाया करना। इस तरह से तुम परमेश्वर का डर मानना सीखोगे 24 लेकिन यदि यह स्थान तुम्हारे लिए बहुत दूर हो, तो 25 उन चीजों को बेचकर, उस पैसे को अपने साथ वहाँ ले जाना 26 उन पैसों से तुम कुछ भी खरीद सकते हो। गाय-बैल, भेड़-बकरी, दाखमधु, मदिरा या जो भी तुम्हारी इच्छा हो, खरीद लेना। तुम परिवार के साथ परमेश्वर याहवे की उपस्थिति में खुश होना 27 तुम अपने फाटक के अन्दर के लेवीय को मत छोड़ना, क्योंकि उसके पास जीवन यापन का कोई साधन नहीं है। 28 तीन-तीन साल के गुजरने पर तीसरे साल की फ़सल का दसवाँ भाग निकालकर अपने फाटकों के अन्दर ही रखना 29 तब लेवी, परदेशी, अनाथ या विधवाएँ जो तुम्हारे फाटकों के भीतर हों, वे भी पेट भर कर खाएँ, जिससे तुम्हारे परमेश्वर याहवे तुम्हारे सभी कामों पर अपना आशीर्वाद बरसाएँ।

15 1 हर सात वर्ष के बाद तुम लोगों को मुक्त किया करना 2 अर्थात् जिस किसी कर्ज़ देने वाले ने अपने पड़ोसी को कुछ उधार दिया तो वह उसे छोड़ दे। वह अपने पड़ोसी या भाई से ज़बरदस्ती भरपायी न करवाए। इसलिए कि याहवे परमेश्वर की ओर से यह तय किया गया है। 3 परदेशी इन्सान से तुम उसे ज़बरदस्ती पटा सकते हो। लेकिन जो कुछ तुम्हारे भाई के पास तुम्हारा हो, उसे तुम बिना भरवाए छोड़ देना 4 तुम्हारे बीच कोई गरीब न होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि तुम पर वहाँ बहुत आशीष होगी। 5 लेकिन यह ज़रूरी होगा कि तुम मन से उनकी आज्ञाओं को मानो 6 तुम पर इतना कृपा होगी कि तुम दूसरे देशों को उधार दोगे। तुम्हें उधार न लेना पड़ेगा। तुम उन पर हावी होगे, लेकिन वे तुम पर न हो सकेंगे। 7 उस देश में तुम्हारे अहाते के भीतर यदि कोई गरीब हो, तो उसके लिए अपने मन को सख्त मत कर लेना। अपनी मुट्ठी को ढीली रखना 8 जिस वस्तु की उसे ज़रूरत हो या जितनी उसकी आवश्यकता हो अपना हाथ ढीला करके उसकी मदद करना 9 सावधान रहना कि तुम्हारे मन में ऐसी चिन्ता न घर कर जाए, कि सातवें साल के पास होने के कारण तुम निर्दयी होकर उसे कुछ न दो। ऐसे में तुम्हारी इस निर्दयता के कारण यदि वह मुझे पुकारे, तो यह तुम्हारा अपराध गिना जाएगा। 10 तुम बिना संकोच उसको देना। फलस्वरूप तुम्हारे हाथ के हर एक काम में सफ़लता मिलेगी। 11 गरीब लोग तो सदैव तुम्हारे देश में होंगे। इसलिए आज्ञा यह है कि अपना हाथ कड़ा न करते हुए दान ज़रूर देना 12 यदि तुम्हारा कोई भाई-बन्धु तुम्हारे हाथ बेचा जाए और वह छैः साल तक सेवा कर चुके, तो सातवें साल में उसे आज़ाद कर देना 13 लेकिन उसे खाली हाथ मत भेजना। 14 अपनी भेड़-बकरियों, खलिहान, दाखमधु के कुण्ड में से ढेर सा देना। जिस तरह से तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें दिया है, तुम भी देना। 15 यह याद रहे कि मिस्त्र में तुम भी गुलाम थे और तुम्हारे

परमेश्वर याहवे ने तुम्हें आज़ाद किया 16 यदि वह प्रेम के
कारण तुम्हारा घर छोड़कर न जाना चाहे, 17 तो सुतारी लेकर
उसका कान दरवाज़े पर लगाकर छेद देना, तब वह हमेशा
के लिए तुम्हारा दास रहेगा। दासी के साथ भी ऐसा करना
18 जब उसे स्वतंत्र करने में तुम्हें मुश्किल हो, क्योंकि उस ने
छैः साल तक मजदूरों की तरह तुम्हारी सेवा की है। तुम्हारे
परमेश्वर याहवे तुम्हारे सभी कामों में बढ़त देंगे। 19 "तुम्हारी
गायों और भेड़-बकरियों के जो भी पहलौठे नर हो, उन
सभी अपने परमेश्वर के लिए अलग करना। अपनी गायों के
पहलौठों से श्रम मत करवाना और न ही अपनी भेड़-बकरियों
के पहलौठे का ऊन कतरना 20 परमेश्वर के ठहराए स्थान पर
अपने परिवार के साथ आकर हर साल उसका मांस खाना।
21 यदि उसमें किसी तरह का खोट हो : जैसे कि लंगड़ापन,
अन्धापन या कुछ और तो उसे परमेश्वर के लिए कुर्बान न
करना 22 उसे अपने फ़ाटकों के अन्दर ही खाना। शुद्ध और
अशुद्ध दोनों तरह के लोग जैसे चिकारे और हिरन का मांस
खाते हैं, वैसे ही उसका भी खा पाएँगे। 23 लेकिन उसका खून
न खाया जाए। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उण्डेल देना।

16 1 "अपने परमेश्वर याहवे के लिए फ़सह का त्यौहार
अबीब महीने में मनाना। इसी महीने में तुम्हारे
परमेश्वर तुम को मिस्र की गुलामी में से निकालकर लाए
थे। 2 इसलिए परमेश्वर द्वारा नियुक्त स्थान पर सब तरह की
कुर्बानियाँ करना 3 कोई खमीर वाली वस्तु उसके साथ मत
खाना। सात दिन तक दुख की रोटी या अखमीरी रोटी खाया
करना। इसलिए कि तुम मिस्र देश से जल्दबाजी में निकले थे,
तुम्हें वह दिन सदैव याद रहना चाहिए 4 पूरे देश में सात दिन
तक खमीर दिखने भी न पाए 5 जिसे तुम्हारे परमेश्वर याहवे
तुम्हें दें। उस फ़सह को अपने फाटक के अन्दर मत खाना।
6 परमेश्वर के निवास स्थान पर हर साल के उसी समय में जब
तुम मिस्र से छूटे थे, फ़सह का पशुबलि करना। 7 वहीं मांस
भूंजकर खाना। सुबह उठकर अपने-अपने तम्बू में लौट जाना
8 छैः दिन अखमीरी रोटी खाते रहना। सातवें दिन तुम्हारे
परमेश्वर के लिए महासभा रखी जाए। उस दिन भी मेहनत
का काम कोई न करे। 9 "खेत में हँसुआ लगाने के समय से सात
हफ्ते गिन लेना। 10 अपने याहवे परमेश्वर की भलाईयों के
अनुसार उन के लिए स्वेच्छाबलि देकर सप्ताहों का त्यौहार
मनाना। 11 अपने-अपने बेटे-बेटियों, दास-दासियों, लेवियों,
अनाथों, विधवाओं और परदेशियों के साथ मिलकर खुशी
मनाना। 12 दिए हुए नियमों-आज्ञाओं को मानने में सावधानी
बरतना। यह भूलना नहीं कि तुम मिस्र में बन्धुआई में थे
13 "तुम अपने खलिहान और दाखमधु के कुण्ड में से सब इकट्ठा
करने के बाद सात दिन तक झोपड़ियों का त्यौहार मनाना
14 सभी लोग जो तुम्हारे फ़ाटक के भीतर हों इस में आनन्द
मनाएँ। 15 इस त्यौहार को सात दिनों तक मनाना। परमेश्वर
तुम्हारी बढ़ती में और सभी कामों में आशीष देंगें। 16 साल में
तीन बार : अखमीरी रोटी, हफ्तों और झोपड़ियों के त्यौहारों
में तुम्हारे सारे पुरूष परमेश्वर की चुनी जगह पर इकट्ठे हों।
वहाँ कोई भी खाली हाथ न आए। 17 सभी पुरूष अपनी दौलत
और आशीष के अनुसार याहवे को दें। 18 तुम अपने एक-एक
गोत्र में से न्यायी और सरदार नियुक्त कर देना। ये लोग
ईमानदारी सच्चाई से इन्साफ़ करें 19 तुम न ही पक्षपात करना
और न ही न्याय देने में गड़बड़ी करना 20 जो बिल्कुल ठीक हो,
उसी पर अड़े रहना, ताकि तुम लम्बे समय तक ज़िन्दा रहो।
और तुम प्राप्त हुए देश में अधिक दिन टिक सको

17 1 "तुम अपने परमेश्वर याहवे के लिए किसी भी ऐसे
पशु को कुर्बान कराने मत लाना, जिस में किसी तरह
की कमी हो। परमेश्वर की दृष्टि में ऐसा करना घिनौना है।
2 यदि तुम्हारे, बीच कोई जन परमेश्वर की वाचा तोड़ता है
और ऐसा काम करता है, जो सही नहीं है 3 अर्थात् मेरी आज्ञा
के खिलाफ़ देवी-देवता, सूरज-चाँद या किसी तारे की पूजा की
हो या दण्डवत किया हो 4 और यह बात तुम्हारे कानों में पड़े,
तो इस घिनौने काम के बारे में जाँच पड़ताल करना, 5 मालूम
हो जाने पर ऐसे व्यक्ति को फाटक के बाहर ले जाकर पत्थरों
से मार डालना 6 जो मौत की सज़ा के लायक हो, वह केवल
एक गवाही के आधार पर न मारा जाए। दो या तीन गवाह
होने चाहिए 7 फ़ैसला सुनाने से पहले साक्षियों के हाथ पहले
उठें, बाद में दूसरे लोगों के। इस प्रकार अपने बीच से बुराई दूर
करना 8 तुम्हारे बीच झगड़ा-फसाद, खून, मारपीट, विवाद
और दूसरे प्रकार के मुकदमें जो मुश्किल लगें, तो परमेश्वर की
चुनी जगह पर आना 9 लेवीय-पुरोहितों (याजकों) के पास
जाकर न्याय सम्बन्धित बातें पूछना 10 उसी के अनुसार तुम
करना और बड़ी सावधानी से यह सब करना 11 उन बातों से
तुम दाएँ-बाएँ मत मुड़ना 12 जो इन्सान घमण्ड के कारण वहाँ
के याजक या न्यायी की यदि न माने, उसे मार दिया जाए
इस तरह से ऐसी बुराई अपने यहाँ से दूर रखना 13 यह सब
सुनकर लोग डरेंगे और अहंकार में नहीं करेंगे 14 "प्रतिज्ञा किए
देश में पहुँचने पर जब तुम कहो कि अपने चारों और के देशों
की तरह हम भी एक राजा नियुक्त करेंगे 15 तब परमेश्वर
द्वारा चुने व्यक्ति ही को राजा बनाना। वह तुम्हारे ही भाईयों
में से कोई हो, न कि परदेशी। 16 वह ढेर सारे घोडे़ न रखे।
वह घोडे लाने के लिए लोगों को मिस्र भी न भेजे। तुम्हें
वापस मिस्र के रास्ते पर जाना ही नहीं है। 17 अपने लिए वह

तमाम स्त्रियों को भी न रखे और न ही सोने रूपे की मात्रा
बढ़ाए 18 राजगद्दी पर न्याय के लिए बैठते समय वह लेवीय
पुरोहितों (याजकों) की किताब की एक नकल अपने पास रखे।
19 वह पुस्तक जीवन भर पढ़ता रहे, ताकि याहवे का आदर
सम्मान करने और नियमों-आज्ञाओं को मानने में सावधानी
बरते। 20 इस तरह से वह घमण्ड से बचेगा और अपने भाईयों
को तुच्छ नहीं समझेगा। तभी वह सीधे रास्ते पर चलता रहेगा
और उसके वंश के लोग इस्त्राएलियों के बीच बहुत समय तक
राज्य कर पाएँगे।

18 1 लेवीय पुरोहितों का या कहें तो लेवीय गोत्रियों
का इस्त्राएलियों के साथ कोई हिस्सा या भाग न
हो। उनका आहार हल और याहवे का दिया हुआ हिस्सा हो।
2 भाईयों के बीच उनका कोई हिस्सा न हो। अपने शब्दों के
अनुसार याहवे स्वयं उनका हिस्सा होंगे 3 चाहे किसी पशु
जैसे गाय-बैल, भेड़-बकरी का मेलबलि हो, उसके करनेवालों
की ओर से पुरोहितों का यह अधिकार होगा कि वे उसका
कंधा, दोनों गाल और पेट प्राप्त करे। 4 अपनी पहली फ़सल
का अनाज, नया दाखमधु, टटका तेल और भेड़ों का पहली
बार कतरा गया ऊन भी, 5 क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर याहवे ने
तुम्हारे सब गोत्रियों में से उसी को चुना है कि वह और उसके
वंश सर्वदा उन के नाम से सेवा करने को मौजूद रहें। 6 फिर
यदि कोई लेवीय इस्त्राएल की बस्तियों में से किसी को, जहाँ
वह परदेशी की तरह रहता हो, अपने मन की बड़ी इच्छा से
उस जगह पर जाए जो नियुक्त है, 7 तो अपने सभी लेवीय
भाईयों की तरह जो वहाँ अपने परमेश्वर की उपस्थिति में
होंगे, वह भी सेवकाई करे। 8 और अपने पुरखों के हिस्से की
कीमत को छोड़ उसको भोजन का हिस्सा भी उनकी तरह
मिला करे 9 जब तुम उस देश में पहुँचते हो तो वहाँ के लोगों
के घिनौने कामों को न सीखना। 10 अपने बेटों या बेटियों को
आग में होम करने वाला, भविष्य की बाते बतलाने वाला,
शुभ-अशुभ मुहूर्तों का मानने वाला, टोन्हा या तांत्रिक, 11 या
बाजीगर या ओझों से पूछने वाला, भूत साधने वाला या भूतों
को जगाने वाला हो। 12 ऐसे काम करने वाले याहवे के सामने
घिनौने हैं। इन्हीं गन्दे कामों को करने की वजह से इन्हें वह
निकालने पर हैं 13 तुम परमेश्वर के सामने शुद्ध बने रहना।
14 देशों के वे लोग जिनसे तुम मिलने वाले शुभ-अशुभ मुहूर्तों
के मानने वाले और भावी कहने वालों की सुनते हैं। लेकिन तुम
को तुम्हारे परमेश्वर ने ये काम नहीं करने दिए। 15 तुम्हारे
परमेश्वर याहवे तुम्हीं में से मेरी तरह एक भविष्यवक्ता को
उठाएँगे, तुम लोग उसी की सुनना 16 यह तुम्हारी उस प्रार्थना
के उत्तर में होगा जो तुम ने होरेब पहाड़ के पास सभा के दिन
अपने परमेश्वर याहवे से की थी, 'मुझे न तो अपने परमेश्वर
याहवे की आवाज़ फिर सुनायी दे और न वह भयंकर आग
देखने को मिली, ताकि मर न जाऊँ।' 17 तब याहवे मुझ से
बोले, "जो वे कह रहे हैं वह बिल्कुल ठीक है।" 18 इसलिए मैं
उन के लिए उन्हीं के बीच से तुम्हारी तरह एक भविष्यवक्ता
पैदा करूँगा। मैं अपनी बातें उसके मुँह में डालूँगा। जैसा-जैसा
मैं कहूँगा, वैसा ही वह कह सुनाएगा। 19 उसके कहे गए शब्दों
को जो व्यक्ति स्वीकार न करेगा, उसका हिसाब उसी से लूँगा।
20 लेकिन जो भविष्यवक्ता घमण्ड में आकर ऐसा कुछ कहे, जो
कहने का आदेश मैंने न दिया हो। या वह दूसरे देवी-देवताओं
के नाम से कुछ कहे, तो उसे मृत्युदण्ड दिया जाए 21 यदि तुम
मन में कहो, "हम कैसे जानें कि वे वचन परमेश्वर ने कहे या
नहीं? 22 सबूत यह होगा यदि नबी की कही हुयी बात पूरी
ही नही होती है, तो वह परमेश्वर की ओर से नहीं थी। उस ने
घमण्ड में आकर वह सब बातें कह दी। ऐसे नबी से न डरना।"

19 1 जब तुम्हारे परमेश्वर याहवे उन देशों के लोगों को
बर्बाद कर दें, जिनके देश को वह तुम्हें देंगे और तुम
अपने-अपने घरों में रहने लगो। 2 तब देश के बीच में तीन नगर
अलग करना 3 यह इसलिए कि एक खूनी भागकर वहाँ शरण
लें 4 यह ऐसा खूनी होना चाहिए जिसने दुश्मनी के कारण
खून नहीं किया, लेकिन गलती से हो गया 5 जैसे कि लकड़ी
काटते समय कुल्हाड़ी बेंट से निकल जाए और जिस पर गिरे
वह मर जाए 6 ऐसा न हो कि रास्ता लम्बा होने के कारण खून
का बदला लेने वाला अपने गुस्से में उसका पीछा करके उसे
जा पकड़े और मार डाले, जब कि वह व्यक्ति प्राणदण्ड पाने
योग्य नहीं है 7 इसलिए यह ज़रूरी है कि तीन नगर अलग
किए जाएँ। 8 तुम्हारे परमेश्वर याहवे उस प्रतिज्ञा के आधार
पर जो उन्हों ने पूर्वजों को दी थी कि तुम्हारी सरहद को
बढ़ाकर वह पूरा देश तुम्हें देंगे, 9 यदि तुम दी गयी आज्ञाओं
को मानने में दिलचस्पी लो और परमेश्वर से प्रेम रखो, उन
के रास्तों पर चलते रहो - तो इन तीन नगरों के अलावा तीन
नगर और अलग करना, 10 इसलिए कि किसी निर्दोष इन्सान
को न मारा जाए और तुम दोषी न ठहरो 11 लेकिन यदि कोई
दुश्मनी की वजह से किसी को मारकर शरण वाले नगर को
भाग जाए 12 तो उसे वापस लाकर खून का बदला लेने वाले
के सुपुर्द करे कि वह मौत की सज़ा पाए 13 उस पर तरस खाने
की आवश्यकता नहीं। तुम निर्दोष के खून को दोष इस्त्राएल
से दूर करना, जिससे तुम्हारा भला हो। 14 अपने इस नए देश
में प्राचीनों द्वारा तय की हुयी सीमा में बदलाव मत लाना
15 किसी भी व्यक्ति के गुनाह के बारे में एक जन की गवाही
काफ़ी नहीं है। दो या तीन गवाह ज़रूर हों। 16 यदि कोई झूठी

गवाही देने वाला किसी के खिलाफ़ याहवे को छोड़ देने की
गवाही देने के लिए आया हो 17 तो वे दोनों व्यक्ति जिनके बीच
मुकदमा हो, याहवे के सामने, अर्थात् उन दिनों के पुरोहितों
और जजों के सामने खड़े किए जाएँ 18 तब जज अच्छी तरह से
पूछताछ करे और यदि फ़ैसला यह हो कि वह झूठा गवाह है
और भाई के विरोध में झूठी गवाही दी है 19 तो अपने भाई
का जिस तरह का नुकसान करवाने की योजना उस ने की हो,
ठीक वैसा ही तुम भी करना। इस तरह से अपने बीच में से
इस तरह की बुराई को दूर करना। 20 दूसरे लोग यह सुनकर
सावधान हो जाएँगे। भविष्य में वे ऐसा काम करने से रूकेंगे।
21 ऐसी स्थिति में तरस न खाया जाए। प्राण के बदले प्राण,
आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ
और पाँव के बदले पाँव।

20 1 अपने दुश्मनों से लड़ाई के समय उन के घोडे, रथ
और बड़ी सेना देखकर घबरा मत जाना। मिस्र की
गुलामी से छुड़ाने वाले तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे साथ हैं।
2 युद्ध के लिए दुश्मन के पास जाते समय पुरोहित (याजक)
फ़ौज के पास आकर कहे, 3 "हे इस्राएलियों आज तुम युद्ध के
लिए जा रहे हो, लेकिन घबराना नहीं 4 शत्रुओं से लड़ने और
तुम्हें बचाने के लिए वह तुम्हारे साथ-साथ रहते हैं।" 5 सरदार
लोग सिपाहियों से कहें, कि जिस व्यक्ति ने नया घर बनाने के
बाद समर्पण न किया हों, वह वापस लौट जाए। ऐसा इसलिए
कि युद्ध में मौत हो जाने पर दूसरा इन्सान उसका समर्पण् न
करे। 6 ऐसा कौन होगा जो अंगूर का बगीचा लगाए लेकिन
फल न खाए। वह भी घर चला जाए, ताकि उसके मरने पर
दूसरा मनुष्य अंगूर न खाए 7 जिस व्यक्ति की शादी की बात
ही लगी हो और शादी न हुयी हो, वह भी घर चला जाए। नही
तो उसके युद्ध में मारे जाने पर दूसरा इन्सान उस से विवाह
कर लेगा। 8 सरदार सिपाहियों से यह भी कहे कि डरपोक
लोग अपने-अपने घर लौट जाएँ, ताकि दूसरे लोग उन्हें
देखकर अपनी हिम्मत न छोड़ दें। 9 यह सब कह चुकने के बाद
सेनापतियों को नियुक्त किया जाए 10 जब कभी किसी नगर
के खिलाफ़ लड़ाई के लिए तैयारी करो, पहले मेल-मिलाप
का संदेश देना 11 यदि वह मान ले और अपने दरवाज़े खोल
दे, तब जितने उसमें हो वे सभी तुम्हारे वश में हो जाएँ और
सेवा करें। 12 लेकिन यदि वे सन्धि के लिए तैयार न हों,
और तुम से लड़ना मांगे, तो उस नगर को घेर लेना। 13 जब
तुम्हारे परमेश्वर याहवे उसे तुम्हारे सुपुर्द कर दें, तब उस
में के सभी पुरूषों को तलवार से मार डालना 14 महिलाओं,
बच्चों, जानवरों और दूसरी वस्तुओं को अपने लिए रख लेना
15 दूर के नगरों से और उन जातियों के नगरों से ऐसा व्यवहार
करना जो यहाँ की नहीं है। 16 लेकिन जो नगर इन लोगों के
हैं, जिन्हें परमेश्वर तुम्हारे आधीन करने वाले हैं, वहाँ के
किसी भी जीव को ज़िन्दा न छोड़ना 17 हित्तियों, एमोरियों,
कनानियों, परिज्जियों, हिब्बयों और यबूसियों को बर्बाद कर
डालना 18 ताकि तुम उन लोगों की तरह देवताओं की सेवा
जैसे घिनौने कामों को करो और परमेश्वर याहवे के खिलाफ़
गुनाह करो 19 जब युद्ध की मनसा से तुम किसी नगर को
जीतने के लिए बहुत समय तक घेरे रहो, तब पेड़ो को नुकसान
न पहुँचाना। उन के फल से तुम फायदा उठा सकोगे। क्या पेड़
भी इन्सान हैं कि तुम उन्हें घेरो? 20 लेकिन जिन पेड़ो के बारे
में तुम यह जानो कि इन के फल खाने लायक नही हैं, तो उन्हें
काट डालना। उस नगर को तब तक घेरे रहना जब तक उस
पर अधिकार न कर लो।

21 1 तुम्हारे प्रतिज्ञा किए हुए देश में यदि कभी मारे गए
इन्सान की देह मैदान में पड़ी मिले और उसके मारने
वाले का सुराग न मिल सके, 2 तो तुम्हारे बुज़ुर्ग और जज उस
जगह जाकर उन नगरों की दूरी नाप लें, जो मारे गए इन्सान
के चारो ओर है। 3 तब जो नगर मारे गए व्यक्ति के पास हों,
उस नगर के प्राचीन अपने गाय-बैलों में से एक बछिया लें। इस
बछिया से किसी तरह का काम न लिया गया हो और न वह
जुए में जोती गई हो। 4 उस नगर के बुज़ुर्ग लोग उसे एक बहते
पानी की ऐसी घाटी में ले जाएँ, जिसे कभी जोता-बोया गया
न हो। वहाँ पर वे उस बछिया की गर्दन को तोड़ डालें। 5 तब
लेवी-पुरोहित पास में आएँ क्योंकि उनको तुम्हारे परमेश्वर
याहवे ने अपनी सेवा करने और आशीर्वाद देने के लिए अलग
किया है। हर तरह के झगड़े और मारपीट की वारदातों में भी
वे न्याय दें। 6 उस मारे गए व्यक्ति के पास नगर के सभी बुज़ुर्ग
उस बछिया के ऊपर जिसकी गर्दन उस घाटी में तोड़ दी गई है
अपने हाथों को धोएँ। 7 वे यह भी कहें, "न तो हमारे हाथों ने
खून बहाया है और न ही हमने अपनी आँखों से देखा है। 8 हे
याहवे, अपने लोगों को जिन्हें आप ने छुड़ाया है, माफ़ करें।
इस निर्दोष के खून बहाए जाने का गुनाह अपनी प्रजा पर न
लगाएँ। तब खून का दोष हट जाएगा। 9 इसलिए तुम वह काम
कर के जो परमेश्वर की आँखों में ठीक है अपने बीच में से
बेगुनाह के खून का आरोप दूर करना 10 जब तुम अपने दुश्मनों
के विरोध में लड़ाई के लिए जाओ, तो तुम्हारे परमेश्वर उन्हें
तुम्हारे वश में कर दें। तुम उन्हें गुलाम बनाकर ले जाओ।
11 तब यदि गुलाम बनाए लोगों के बीच कोई सुन्दर महिला
दिखे और तुम उसे चाहने लगो और अपनी पत्नी बनाना चाहो,
12 तो उसे अपने कर ले आना। वहाँ पर वह अपना सिर मुंडाए
और नाखून कटाए। 13 फिर वह अपनी बँधुवाई के कपड़े भी

उतार दे और तुम्हारे घर ही में रहे। वह पूरे एक महिने तक
अपने माता-पिता के लिए शोक मनाए। इसके बाद ही तुम
उसके पति बन सकते हो और वह तुम्हारी पत्नी हो जाएगी।
14 यदि वह तुम्हे अच्छी न लगे, तो वह जहाँ जाना चाहे, उसे
जाने देना। पैसे से न उसे बेचना और न बुरा बर्ताव करना,
क्योंकि तुम ने उसके शील को बिगाड़ दिया है 15 किसी व्यक्ति
की दो पत्नियाँ हों और एक उसे अच्छी लगती हो और दूसरी
भाती न हो। दोनों के बेटे पैदा होने पर यदि बड़ा बेटा अप्रिय
पत्नी से हो, 16 तो दौलत के बँटवारे के समय वह अपनी प्रिय
पत्नी से उत्पन्न बेटे को अप्रिय पत्नी से उत्पन्न बेटे की जगह में
पहलौठा नहीं ठहरा सकता 17 लेकिन वह अपनी अप्रिय पत्नी
से उत्पन्न बेटे को अपनी सारी दौलत का दोगुना भाग देकर
उसके पहलौठेपन की सच्चाई को स्वीकार करे। वह तो उसके
पुरूषत्व का पहला प्रमाण (फल) है और पहलौठे का अधिकार
उसी का है। 18 यदि किसी का बेटा ज़िद्दी और बलवई है, जो
अपने माता-पिता का कहना न मानता हो और डाँट-फटकार
के बावजूद भी आज्ञाकारी न बनें, 19 तो उसके माता-पिता
उसको पकड़कर नगर प्राचीनों के पास ले जाएँ। 20 वे वहाँ
के नगर प्राचीनों को बताएँ कि उनका वह बेटा ज़िद्दी और
बलवई है। यह हमारी सुनता नहीं है और पेटू तथा पियक्कड़ है।
21 तब उस नगर के सब लोग पत्थरवाह करके उसे मार डालें।
इस प्रकार तुम अपने यहाँ से इस बुराई को दूर रखना। यह
सुनकर लोग भी डरेंगे। 22 "यदि किसी व्यक्ति ने मौत की सज़ा
लायक गुनाह किया हो, तो उसे मार कर पेड़ पर लटका देना।"
23 उसकी लाश रात भर पेड़ पर लटकी न रहे। उसी दिन उसे
दफ़ना देना। इस तरह से प्रतिज्ञा किए देश को अशुद्धता से
बचाना। याद रखना पेड़ पर लटकाया व्यक्ति परमेश्वर से
सज़ा पाया हुआ है।

22 1 "किसी के भटके हुए गाय-बैल या भेड़-बकरी को
नज़र-अन्दाज़ करने के बजाए, उसके मालिक के यहाँ
पहुँचा देना। 2 लेकिन यदि तुम्हारा वह भाई पास में न रहता
हो, या तुम उसे जानते न हो तो उसे अपने यहाँ रख लेना। उस
व्यक्ति के अपने जानवर को ढूँढते रहने तक वह तुम्हारे पास ही
रहे 3 उसके जानवर या कपड़े किसी भी वस्तु के साथ भी ऐसा
ही करना।" 4 "रास्ते में अपने भाई के किसी पशु को पड़ा हुआ
देखकर आगे मत बढ़ जाना। उसे उठाने में उसकी मदद ज़रूर
करना।" 5 "कोई महिला आदमियों के कपड़े न पहने और न ही
कोई आदमी महिला का पहिरावा पहने। परमेश्वर की दृष्टि
में ऐसा करने वाले घृणित हैं।" 6 "रास्ते में पेड़ या ज़मीन पर
तुम्हें किसी चिड़िया का घोंसला दिखाई दे सकता है। उसमें
बच्चे होंगे या अण्डे या उनकी माँ अण्डों पर बैठी होगी। तुम
बच्चों सहित उनकी माँ को मत लेना। 7 तुम उन बच्चों को ले
सकते हो, लेकिन माँ को जाने देना, ताकि तुम्हारा भला होने
के साथ, तुम्हारी उम्र अधिक हो।" 8 अपना नया घर बनाने पर
छत की मुण्डेर ज़रूर बनाना, ताकि वहाँ से किसी के गिर कर
मर जाने पर तुम खून के अपराधी न ठहरो।" 9 "अपने अंगूर के
बगीचे में दो तरह के बीज मत बोना। तब उसकी उपज और
बीज अपवित्र न ठहरेंगे। 10 हल जोतते समय बैल और गदहा
एक साथ इस्तेमाल न करना 11 ऊन और सनी से मिले कपड़े न
पहनना 12 ओढ़ने की चादर के चारों ओर की कोर पर झालर
लगाना 13 एक पुरूष के किसी महिला से विवाह के बाद उसे
अच्छी न लगने पर 14 यदि वह उसकी बुराई करने के साथ ही
बुराई का आरोप लगाए,‘ मैंने इस महिला में कुवाँरी के चिन्ह
नही पाए हैं।’ 15 तो उस महिला के माता-पिता नगर के फाटक
पर बुज़ुर्ग लोगों के पास कुँवारेपन के सबूत के साथ जाएँ।
16 उस महिला का पिता, बुज़ुर्ग लोगों से कहे, 'मैंने अपनी बेटी
का विवाह इस आदमी के साथ कराया था, लेकिन इस आदमी
को यह अच्छी नहीं लगती है 17 मेरी बेटी पर कुकर्म का आरोप
भी वह लगा रहा है, लेकिन मेरी बेटी के कुँवारेपन के चिन्ह ये
रहे।’ 18 उसी समय उसके माता-पिता बुज़ुर्ग लोगों के सामने
चादर फैलाएँ। 19 तब वहाँ के पुरनिए उस आदमी को डाँट
लगाकर सौ शेकेल रूपे का दण्ड देते हुए महिला के पिता को
दें। ऐसा इसलिए क्योंकि उस व्यक्ति ने एक इस्त्राएली महिला
की बदनामी की है। वह महिला उसकी पत्नी जीवन भर रहे।
वह व्यक्ति उसे कभी तलाक न दे सके। 20 लेकिन यदि उस
महिला में कुँवारीपन के चिन्ह नहीं पाए गए, तो उसे उसके
पिता के घर के दरवाज़े पर लाकर पत्थरवाह किया जाए।
21 ऐसा इस कारणवश क्योंकि उस ने अपने पिता के घर में
वेश्या का काम किया। इस तरह से तुम अपने बीच से ऐसी
बुराई को दूर रखना। 22 "यदि कोई पुरूष किसी दूसरे पुरूष से
विवाहित महिला के साथ सोता हुआ पकड़ा जाए, तो दोनों
ही व्यक्ति जान से मार डाले जाएँ।" 23 किसी कुवाँरी कन्या के
विवाह की बात लगी हो, लेकिन कोई दूसरा पुरूष उसके साथ
बलात्कार करे. 24 तो उन दोनों को फाटक के बाहर ले जाकर
पत्थरों से मार डाला जाए। यह सज़ा कन्या को इसलिए कि
उस ने शोर मचाकर दूसरों को सतर्क नहीं किया और पुरूष
को इसलिए कि उसके एक कन्या की लाज न रखी। 25 "यदि
एक कन्या से जिसके विवाह की बात लग चुकी हो, कोई पुरूष
जबरदस्ती यौन सम्बन्ध करे, तो ऐसे पुरूष को जान से मार
डाला जाए 26 उस कन्या को सज़ा न दी जाए, क्योंकि पुरूष
ने जो़र-जबरदस्ती से (जैसे कोई किसी पर हमला करता है)
ऐसा किया, 27 कि मैदान में मैं अकेले होने पर उसे कोई बचाने
भी नहीं आ सका 28 "यदि कोई पुरूष किसी ऐसी कन्या को

पकड़कर कुकर्म करे, जिसकी शादी की बात न लगी हो और वे पकड़े जाएँ, 29 तो वह बुरा काम करने वाला व्यक्ति कन्या के पिता को पचास शेकेल रूपा दे। इसलिए कि उस ने उसकी इज़्ज़त को लूटा, इसलिए वह उसे कभी तलाक न दे और उसे अपनी पत्नी बनाकर रखे। 30 कोई व्यक्ति अपनी सौतेली माँ को अपनी पत्नी न बनाए। यह तो अपने पिता के ओढ़ने को हटाने की तरह है।

23 1 "जिस इन्सान के अण्डे कुचले गए हों या लिंग काट डाला गया हो, वह याहवे की सभा में न आए।" 2 "कुकर्म से जन्मा हुआ व्यक्ति भी याहवे की सभा में न आए। यहाँ तक कि उसकी दस पीढ़ी तक उसके वंश का कोई व्यक्ति याहवे की सभा में प्रवेश न करे।" 3 "याहवे की सभा में कोई अम्मोनी या मोआबी को आने की इजाज़त नहीं है। यह बात उनकी दसवीं पीढ़ी तक मानी जाए।" 4 ऐसा इसलिए क्योंकि जब तुम मिस्र की गुलामी में से निकले थे, तब अनाज-पानी के साथ उन लोगों ने तुम से मुलाकात नहीं की थी। इतना ही नहीं उन लोगों ने अरम्नहरैम देश के पतोर नगर वाले बोर के बेटे बिलाम को तुम्हें शाप देने के लिए दक्षिणा दी। 5 लेकिन तुम्हारे परमेश्वर याहवे ने बिलाम की बात न सुनी। तुम्हारे परमेश्वर याहवे ने तुम्हारे लिए उसके द्वारा दिए गए शाप को आशीर्वाद में बदल डाला, क्योंकि वह तुम से प्रेम करते थे 6 अपने जीवन काल में तुम उन के कल्याण और भले की कामना मत करना। 7 "एदोमी लोगों से नफ़रत मत करना, क्योंकि वह तुम्हारे भाई हैं। मिस्त्रियों लोगों से भी नफ़रत न करना, क्योंकि तुम उन के देश में परदेशी थे। 8 उन के यहाँ जिन परपोतों का जन्म हो, वे याहवे की सभा में आ सकते हैं। 9 अपने विरोधियों (दुश्मनों) से लड़ने के लिए जब कभी तुम छावनी डालो, तो बुरी बातों से बचना 10 यदि रात में किसी आदमी का वीर्य बह गया हो, तो वह छावनी के बाहर ही रहे और अन्दर न आये। 11 शाम होने से पहले वह नहाए और सूरज डूबने के बाद छावनी में आए 12 "तुम्हारे शौचालय की एक जगह रहे, उसी का इस्तेमाल लोग करें।" 13 अपने पास एक खनती भी रखा करना। सण्डास करने के बाद मिट्टी खोदकर मल को ढाँक ज़रूर दिया करना। 14 तुम्हारे परमेश्वर याहवे तुम्हें बचाने और तुम्हारे दुश्मनों को तुम से हरा देने के लिए तुम्हारे बीच में होंगे। इसलिए तुम्हारी छावनी शुद्ध होनी चाहिए, ताकि कोई अशुद्ध चीज देखकर वह तुम से अप्रसन्न न हो जाएँ। 15 जो गुलाम अपने मालिक के पास से भाग कर तुम्हारी शरण में आए, उसको उसके मालिक के सुपुर्द मत करना। 16 जो नगर उसे पसन्द आए, उसमें उसे रहने देना। उस पर अन्धेर भी मत करना 17 इस्राएली महिलाएँ देवदासी का सा काम न करें। इस्राएली पुरूष भी इस तरह का काम न करें। 18 अपनी किसी मन्नत को पूरा करने के लिए वेश्यापन या पुरूषगमन से कमाए हुए धन का इस्तेमाल मत करना। ऐसा इसलिए है क्योंकि दोनों जगह की कमाई याहवे परमेश्वर की निगाह में घिनौनी हैं। 19 दौलत, खाने की वस्तु या कुछ और क्यों न हो, ब्याज पर कर्ज की तरह अपने भाई को न देना। 20 परदेशी को ब्याज पर कर्ज दे सकते हो, लेकिन अपने किसी भाई के साथ ऐसा व्यवहार न करना। यदि तुम इस बात को मानोगे, तो तुम प्रतिज्ञा किए हुए देश में जो काम भी करोगे, परमेश्वरीय आशीष उस पर रहेगी। 21 अपने परमेश्वर याहवे के लिए जब तुम (यदि तुम) कोई मन्नत मानो, तो उसे पूरा करने में देर न करना, क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर उसे तुम से ले लेंगे और तुम गुनाहगार ठहरोगे 22 लेकिन यदि तुम मन्नत न मानो, तो यह कोई गुनाह नहीं है। 23 अपने मुँह से निकली हुयी बात को पूरा करने में सावधानी बरतना। अपनी इच्छा से अपने परमेश्वर याहवे के लिए जैसी मन्नत मानो, पूरी आज़ादी से उसे पूरा करना 24 किसी के अंगूर के बगीचे में जाने पर जी भर कर अंगूर खाना, लेकिन अपने बर्तन में कुछ भी मत रखना। 25 तुम किसी के खेत में खड़ी फ़सल के समय बालें तोड़ सकते हो, लेकिन किसी के खड़े खेत में हँसुआ न लगाना।

24 1 "किसी महिला से विवाह के बाद यदि किसी पुरूष को उसमें कोई शर्मनाक बात के कारण वह अच्छी नहीं लगती है तो वह त्याग पत्र देकर अपने घर से उसे निकाल दे 2 यदि वह महिला जाने के बाद दूसरे पुरूष की पत्नी बन जाती है 3 और यह दूसरा पति भी उस से नफ़रत करने लगता है। इसके बाद वह तलाकनामा देकर घर से बाहर भेज देता है। या फिर यह पति का देहान्त हो जाता है, 4 तो महिला का पहला पति जिसने उसे तलाक देकर निकाल दिया था, वापस फिर से उसे अपनी पत्नी नही बना सकता, क्योंकि उस महिला से सम्भोग किया जा चुका है। परमेश्वर की दृष्टि में यह घिनौनी बात होगी। जिस नए देश में तुम दाखिल होने वाले हो, वहाँ ऐसा न होने देना। 5 "विवाह के तुरन्त बाद पुरूष फ़ौज में युद्ध के लिए न जाए और उसे कोई जिम्मेदारी भी न सौंपी जाए। वह साल भर अपने घर में छुट्टी मनाए और पत्नी को खुश रखे। 6 "चक्की या उसके ऊपरी पाट को गिरवीं न रखा जाए, क्योंकि यह तो प्राण को गिरवी रखना है।" 7 "यदि कोई इस्राएली किसी का अपहरण करते हुए पकड़ा जाए और उसके साथ कठोर बर्ताव कर या बेच दे, तो ऐसे व्यक्ति को जान से मार दिया जाए।" 8 "कुष्ट रोग से सतर्क रहना, लेवीय पुरोहित जो कुछ तुम्हें सिखाए, वैसा ही करते रहो। मैंने उसे जो सलाह दी है उसी के अनुसार करना।" 9 मिस्र से

निकलते समय परमेश्वर याहवे ने रास्ते में मरियम के साथ
कैसा व्यवहार किया था, यह याद रखना 10 "अपने पड़ोसी को
किसी भी तरह का कर्ज देने पर बन्धक लेने के लिए उसके घर
के अन्दर मत जाना।" 11 कर्ज लेने वाला स्वयं बाहर बन्धक
की चीज लाए। 12 यदि वह मनुष्य गरीब हो तो उसका बन्धक
अपने पास रखकर सो मत जाना। 13 सूरज डूबते ही उसका
बन्धक उसे वापिस कर देना, ताकि वह रात में ओढ़कर सो
सके और तुम्हे आशीर्वाद दे। परमेश्वर याहवे की दृष्टि में ऐसा
रवैया कीमती और उचित है। 14 "किसी गरीब इन्सान को
पीड़ा मत देना। वह तुम्हारे जात भाईयों में से या तुम्हारे देश
के फाटकों के अन्दर रहने वाले परदेशियों में से हो।" 15 सूरज
डूबने से पहले उसकी मजदूरी दे देना, क्योंकि वह गरीब है।
उसका सारा मन उसी पर लगा रहता है। यदि वह परमेश्वर
को पुकारेगा तो यह तुम्हारा अपराध ठहरेगा 16 "न बेटे के
कारण पिता और न पिता के कारण बेटे की जान ली जाए।
हर एक अपने गुनाह के लिए सज़ा पाए।" 17 किसी परदेशी
या अनाथ के साथ अन्याय मत करना। न ही किसी विधवा के
कपडे गिरवीं रखना। 18 लेकिन याद रखना कि तुम मिस्र में
गुलाम थे। तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हे वहाँ से छुड़ाया। इसलिए
मैं तुम्हें ऐसा करने का आदेश दे रहा हूँ। 19 "जब तुम अपने
खेत की फ़सल काटो और कोई चूला भूल जाओ. तो वापस लेने
के लिए मत जाना। वह कोई परदेशी, अनाथ या विधवा के
इस्तेमाल के लिए हो। इस से तुम्हारे परमेश्वर याहवे तुम्हारी
मेहनत पर आशीर्वाद देंगे। 22 जैतून के पेड़ के फलों को झाड़ते
समय दूसरी बार मत झाड़ना। वह किसी परदेशी, अनाथ या
विधवा को मिले। जब तुम अंगूर के बगीचे से अंगूर तोड़ो, तो
एक ही बार तोड़ना, दूसरी बार नहीं। वह परदेशी, अनाथ
और विधवा के लिए हो। यह तुम्हें याद रहे कि तुम मिस्र में
गुलाम थे, इसलिए मैं तुम्हें यह हुक्म दे रहा हूँ।

25 1 आपसी झगड़ों के निबटाए जाने के लिए अदालत
में जाओ। जज की यह जिम्मेदारी है कि वही बेगुनाह
का बचाव करे और गुनाहगार को सज़ा दिलवाए। 2 यदि
अपराधी को कोड़े लगाए जाने की सज़ा दी गयी है, तो जज
उसे लिटाकर उसके गुनाह के अनुसार गिनकर अपने सामने
कोड़े लगवाए। 3 उसे चालीस कोड़े से अधिक नही लगाए जा
सकते है। चालीस से अधिक होने पर तुम्हारा भाई तुम्हारी
दृष्टि में तुच्छ ठहराया जाएगा 4 जिस बैल से काम लिया जाए
उसे भूखा न रखा जाए। 5 साथ में रहने वाले भाईयों में से यदि
एक बिना औलाद मर जाए, तो मरे हुए की पत्नी का विवाह
परिवार से बाहर किसी आदमी से हो। उसके पति का भाई
उस विधवा को अपनी पत्नी बना ले। वही पति के भाई की
जिम्मेंदारी पूरी करे। 6 उस महिला का पहलौठा बेटा मरे भाई
के नाम का कहलाए जिससे उस भाई का नाम इस्त्राएल में से
समाप्त न हो जाए। 7 यदि वह आदमी अपने भाई की पत्नी को
अपनाना न चाहे, तो उसके भाई की पत्नी फाटक पर बुज़ुर्गों के
पास जाए और कहे मेरे पति का भाई इस्त्राएल में अपने भाई
का नाम बनाए रखने के लिए तैयार नही है। वह पति के भाई
की जिम्मेंदारी पूरी करने से इन्कार कर रहा है। 8 तब नगर के
प्राचीन या बुज़ुर्ग उसे बुलाएँ और उस से बातचीत करें। यदि
वह अड़ जाए कि अपने भाई की विधवा को अपनी पत्नी नहीं
बनाएगा, 9 तो उसके भाई की पत्नी प्राचीनों के सामने उसके
पास जाकर उसके पैरों से जूती उतारें और उसके मुँह पर थूक
दें। फिर महिला कहें, जो आदमी अपने भाई के वंश को जारी
न रखना चाहे, उसके पास ऐसा ही किया जाता है। 10 तब
इस्त्राएल में उस आदमी का यह नाम पड़ जाएगा : 'जूती उतारे
हुए पुरूष का घराना' 11 दो पुरूषों (जाति-भाई) में हाथा-पाई
हो सकती है। ऐसे समय में एक की पत्नी बीच-बचाव करते
समय मारने वालों के गुप्तांग को पकड़ ले. 12 तो तुम उसके
हाथ काट डालना। उस पर दया बिल्कुल न दिखाना। 13 "एक
ही वजन के छोटे बड़े बाँट, तुम अपनी थैली में मत रखना।
14 अपने घर में भी एक ही नाप के छोटे बड़े नपुए मत रखना
15 तुम्हारे बाँट और नपुए दोनों, पूरे-पूरे और सही हों ताकि
जो देश तुम्हारे परमेश्वर याहवे तुम्हें देने जा रहे हैं, वहाँ
लम्बे समय तक रहने पाओ। 16 क्योंकि जो व्यक्ति इस तरह
के कामों को करता है, वह तुम्हारे परमेश्वर याहवे के सामने
घिनौना है। 17 याद रखना कि जब तुम मिस्र में से निकलकर
आ रहे थे, तो अमालेकियों ने तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव किया,
18 रास्ते में उन्हों ने तुम्हारा सामना किया। जब तुम थके-मांदे
थे, तो जो लोग पीछे आ रहे थे, उन पर उस ने हमला किया।
परमेश्वर का डर उन के मन में नहीं था। 19 इसलिए जब
तुम्हारे परमेश्वर याहवे तुम्हारे चारों और के दुश्मनों से उस
देश में जो वह तुम्हे देने वाले हैं, तुम्हे आराम दे, तब तुम इस
दुनिया में से अमालेकियों का नामो निशां मिटा डालना। यह
बात कभी भूलना नहीं।

26 1 "प्रतिज्ञा किए हुए देश में पहुँचकर जब तुम वहाँ
रहने लगो, 2 तो वहाँ की ज़मीन की हर तरह की
पहली उपज थोड़ी-थोड़ी लेकर टोकरी में रखना। उसे उस
जगह ले जाना, जिसे परमेश्वर याहवे अपना नाम बनाए
रखने के लिए चुनेंगे। 3 तब याजक (पुरोहित) के पास जाकर
कहना, 'आज मैं अपने परमेश्वर के सामने यह ऐलान करता
हूँ कि जिस देश को देने का वायदा परमेश्वर ने किया था,
उस में हम दाखिल हो चुके हैं।' 4 फिर पुरोहित टोकरी को

तुम्हारे हाथ से लेकर तुम्हारे याहवे परमेश्वर की वेदी के
सामने रख दे। 5 इसके बाद तुम अपने परमेश्वर याहवे के
सामने यह कहना, 'मेरा पिता जगह-जगह जाने वाला अरामी
था। वह अपने छोटे से परिवार के साथ वहाँ जाकर रहा।
वहीं उसके द्वारा एक बड़ी शक्तिशाली और संख्या में अधिक
जाति उत्पन्न हुयी, 6 तब मिस्रियों ने हमारे साथ बुरा बर्ताव
किया, दुख दिया और कठोर सेवा करवायी। 7 तब अपने
पूर्वजों के परमेश्वर के सामने हम गिड़गिड़ाए। परमेश्वर ने
हमारी सुन ली। उन्हों ने हमारी परेशानी, मेहनत और होने
वाले अत्याचार को भी देखा। 8 फिर याहवे अपने ताकतवर
हाथ के द्वारा भयंकर आंतक चिन्ह तथा अद्‌भुत कामों के साथ
हमें मिस्र देश से निकाल लाए। 9 उन्हों ने हमें यहाँ पहुँचाकर
यह देश दिया है, जो बहुत सम्पन्न है। 10 हे याहवे, 'देखिए, जो
ज़मीन आप ने मुझे दी है, उसकी पहली फ़सल मैं लाया हूँ।'
फिर इसे तुम अपने परमेश्वर याहवे के सामने रखना तथा
अपने परमेश्वर याहवे का भजन-कीर्तन करना 11 तब जितनी
अच्छी चीजें तुम्हारे परमेश्वर याहवे ने तुम को और तुम्हारे
परिवार को दी हैं, उन सभी के लिए तुम लेवीय और अपने
बीच रहने वाले परदेशी के साथ मिलकर खुश होना 12 तीसरे
साल अर्थात् दशमांश देने के साल में अपनी सब प्रकार की
बढ़त का दसवाँ भाग निकाल देने के बाद उस लेवीय, परदेशी,
अनाथ व विधवा को देना, ताकि वे खाकर सन्तुष्ट हों। 13 तब
तुम अपने परमेश्वर याहवे से कहना, जो आज्ञा आप ने मुझे दी
है, उन सभी को ध्यान में रखते हुए मैंने किया है। मैंने लेवीय,
परदेशी, अनाथ तथा विधवा को दिया है। मैंने न ही किसी
आज्ञा को टाला है, न ही भुलाया है। 14 उस हिस्से में से मैंने न
अपने दुख के समय कुछ खाया है, न कोई चीज मैंने अशुद्धता
की हाल में निकाली है। मैंने किसी मरे हुए के लिए भी कुछ
नहीं दिया। अपने परमेश्वर याहवे की मैंने सुनी है। आपकी
दी गयी सभी आज्ञाओं को मैंने माना है 15 अपने पवित्रस्थान
स्वर्ग में से हम पर दृष्टि करें अपने इस्राएल को आशीष दें।
हमारे पूर्वजों से किए गए वायदे के अनुसार हमें इस सम्पन्न
देश में आशीष दीजिए। 16 तुम्हारे परमेश्वर याहवे आज इन
विधियाँ-नियमों के पालन करने का हुक्म देते हैं। इसलिए
अपने पूरे तन-मन से इन को करने में सावधानी बरतना।"
17 आज तुम ने यह ऐलान किया है कि तुम उन के रास्तो पर
चलोगे। यह भी कि तुम उनको विधियों, आज्ञाओं और नियमों
को सुनकर मानोगे। 18 अपने वायदे के अनुसार आज तुम्हें
अपनी 'प्रजा' और 'कीमती दौलत' कहा है और यह भी कि तुम
उनकी सभी आज्ञाओं को माना करो। 19 यह भी कि जितने
राष्ट्र (लोग, जाति) उन्हों ने बनाए हैं, उन सभी में वह तुम्हें
सब से ज्यादा बड़ाई, शौहरत और इज़्ज़त देंगे। साथ ही यह
भी कि उन के कहने के अनुसार अपने परमेश्वर याहवे के लिए
पवित्र लोग ठहरो।

27 1 तब मूसा और इस्राएल के बुज़ुर्गों ने लोगों को
आज्ञा दी, "आज मेरी दी गयी सभी बातों का पालन
किया जाए।" 2 यर्दन नदी को पार कर के जिस दिन तुम उस
देश में पाँव रखो, जिसे तुम्हारे याहवे परमेश्वर तुम्हें दे रहे
हैं, उसी दिन तुम अपने लिए बड़े-बड़े पत्थर खड़े करके चूने
से पोतना 3 पार कर लेने के बाद दी गई आज्ञाओं-नियमों को
उन पत्थरों पर लिखना। ऐसा करने से तुम बुज़ुर्गों के परमेश्वर
याहवे को प्रतिज्ञा किए हुए समृद्ध देश में दाखिल हो सकोगे।
4 यर्दन नदी पार कर चुकने के बाद मेरी आज्ञा के मुताबिक
पत्थरों को एबाल पहाड़ पर खड़ा करना और चूने से पोत
डालना 5 वहीं तुम अपने याहवे परमेश्वर के लिए पत्थरों से
एक वेदी तैयार करना। यह ध्यान रहे कि उस पर लोहे का
कोई औजा़र न चले 6 अनगढ़े पत्थरों से इस वेदी को बनाना।
इसके बाद परमेश्वर याहवे के लिए होमबलि चढ़ाना 7 वहीं
मेलबलि चढ़ाना और परमेश्वर की उपस्थिति में खुश होना।
8 चूने से पुते पत्थरों पर आज्ञाओं-नियमों को अच्छी तरह
लिख डालना। 9 इसके बाद मूसा तथा लेवीय-पुरोहितों ने पूरे
इस्राएल से कहा, "हे इस्राएल, शान्त होकर सुनो, तुम आज
परमेश्वर के लोग बन चुके हो, 10 इसलिए तुम अपने परमेश्वर
की सुनकर उनकी आज्ञाओं-नियमों को मानना।" 11 उसी दिन
मूसा ने आज्ञा दी, 12 "यर्दन नदी पार कर चुकने के बाद शमौन,
लेवी, यहूदा, इस्साकार, यूसुफ़ और बिन्यामीन, गिरिज़्जीम
पहाड़ पर लोगों को आशीर्वाद देने के लिए खड़े हो जाएँ।
13 आज्ञा न मानने को बताने के लिए एबाल पहाड़ पर रूबेन,
गाद, आशेर, जबुलून, दान और नप्ताली खड़े हों। 14 इसके बाद
लेवी ऊँची आवाज़ में इस्राएलियों से कहें, 15 "उसे सज़ा मिले,
जो मूर्तिकार के हाथों से गढ़ी या ढली मूर्ति बनवाकर किसी
छिपी जगह में रखे। यह याहवे के लिए घिनौनी बात है। तब
सभी लोग जवाब में कहें, ऐसा ही हो।" 16 जो अपने पिता या
माता की बेइज़्जती करे, वह दण्ड पाए

28 1 यदि तुम बड़ी लगन से अपने परमेश्वर याहवे की
कही हुयी बातों को सुनने के बाद वैसा ही करो, तो
दुनिया के सारे देशों से अधिक परमेश्वर तुम्हारी उन्नति करेंगे।
2 अपने परमेश्वर याहवे की आज्ञा मानने से तुम इन भलाईयों
को चख सकोगे। 3 गाँव हो या नगर, दोनों जगह पर तुम्हारा
भला होगा। 4 तुम्हारे बालबच्चे, ज़मीन की फ़सल, जानवरों के
बच्चे, मवेशियों की संख्या तथा रेवड़ के मेंमने 5 तुम्हारी टोकरी
और कठौती आशीषित हो 6 अन्दर आते और बाहर जाते समय

तुम्हारा कल्याण हो 7 "तुम पर हमला करने वाले दुश्मनों
को परमेश्वर तुम्हारे सामने ही हरा देंगे। वे लोग एक रास्ते
से आएँगे, लेकिन सात रास्तों से भाग निकलेंगे।" 8 तुम्हारे
कामों पर और भण्डार (खत्तों) पर याहवे का आशीर्वाद होगा।
तुम्हें मिलने वाले देश पर परमेश्वर याहवे की आशीष रहेगी।
9 अपने परमेश्वर याहवे की आज्ञाओं को मानने और उन्हीं के
रास्तों पर चलने से परमेश्वर के वायदे के अनुसार वह तुम
लोगों को मजबूत पवित्र लोग कर के बनाएँगे। 10 इसलिए
दुनिया के सभी लोग जान लेंगे कि याहवे हैं और उन से डरेंगे
भी। 11 तुम्हें जो देश देने के लिए याहवे ने पूर्वजों से वायदा
किया था, उस देश में याहवे तुम्हारे बालबच्चों, जानवरों के
बच्चों तथा भूमि की फ़सल में बढ़ाएँगे। 12 समय पर बरसात
तथा मेहनत के कामों पर आशीर्वाद देने के लिए वह हाथ
बढ़ाएँगे। तुम दूसरों को कर्ज़ दोगे, दूसरो से लोगे नहीं। 13 तुम्हें
परमेश्वर पूँछ नहीं, सिर बनाएँगे। तुम शिरोमणि होगे।
लेकिन यह सब तभी होगा, जब तुम परमेश्वरीय आज्ञाओं
का पालन करोगे। 14 जिन बातों की आज्ञा आज तुम्हे दी जा
रही है, उन में से किसी का हल्का समझकर देवी-देवताओं का
भजन-कीर्तन मत करने लगना 15 यदि तुम अनसुनी करके इन
नियमों-आज्ञाओं को टाल दो, तो तुम्हें सज़ा मिलेगी 16 तुम
चाहे नगर हो या गांव में, सज़ा के लायक ठहरोगे। 17 तुम्हारी
टोकरी और कठौती, दोनों ही शापित होंगे 18 तुम्हारी औलाद,
मूर्ति की उपज, पशुओं की बढ़त तथा रेवड़ के बच्चे 19 अन्दर
आते समय और बाहर जाते समय तुम शापित ही होगें। 20 बुरे
कामों में लग जाने और मुझ याहवे को छोड़ देने का परिणाम
यह होगा कि तुम जिस काम में हाथ डालोगे, याहवे का शाप,
फटकार और घबराहट तब तक रहेगी, जब तक तुम बर्बाद
न हो जाओ। 21 तुम पर आपत्ति (मरी) तब तक रहेगी, जब
तक तुम प्रतिज्ञा किए हुए देश हासिल करने से पहले मिट न
जाओ। 22 बुखार, तपेदिक, जलन, तेज ताप, तलकर, झुलस
और गेरूई तब तक तुम्हारे पीछे पड़े रहेंगे, जब तक तुम्हारा
नामों-निशां न रहे 23 तुम्हारे सिर के ऊपर आसमान कांसे
की तरह और पाँव के नीचे की ज़मीन लोहा बन जाएगी।
24 तुम्हारे देश में बरसात की जगह पर रेत और धूल बरसेगी।
ऐसा तब तक होता रहेगा, जब तक तुम पूरी तरह से धूल
में न मिल जाओ 25 तुम्हारे दुश्मनों से याहवे तुम्हें हरा देंगे।
एक दिशा से तुम उन पर हमला करोगे, लेकिन सात रास्तों
से होकर तुम भाग खड़े होगे। दुनिया के सभी लोगों के लिए
तुम पूरी बर्बादी का एक नमूना बन जाओगे। 26 तुम लोगों की
लाशें पक्षियों और जानवरों के लिए भोजन वस्तु बन जाएँगी।
उन प्राणियों को भगाने वाला कोई न होगा। 27 याहवे तुम्हें
मिस्र के से फोड़ों, बवासीर, दाद और खुजली से इतना कष्ट
देंगे, कि तुम ठीक नहीं हो पाओंगे। 28 तुम पागलपन, अन्धेपन
और मन की घबराहट से परेशान रहोगे। 29 जिस तरह अन्धा
अन्धेरे में उसी तरह तुम दिन-दुपहरी में टटोलते रहोगे। तुम
अपने कामो में कामयाब न होगे। तुम हमेशा सताए जाओगे
और लूटे जाओगे। तुम्हें कोई छुड़ा न सकेगा। 30 तुम किसी
लड़की से सगाई करोगे, लेकिन कोई दूसरा उसे भ्रष्ट कर
डालेगा। तुम घर तो बना सकोगे, लेकिन उसमें रह नहीं
पाओगे। तुम अंगूर का बगीचा तो लगाओगे, लेकिन अंगूर
चख भी न सकोगे 31 तुम्हारे देखते-देखते तुम्हारा पशु मारा
जाएगा, लेकिन उसमें से तुम्हें खाने को कुछ न मिलेगा। लोग
तुम्हारा गदहा छीन लेंगे और लौटांएगे नही। तुम्हारी भेड़े
तुम्हारे दुश्मनों को दे दी जाएँगी। तुम उन के लिए तरसते
रहोगे, लेकिन बेबस रहोगे। 33 तुम्हारी मेहनत का फल और
ज़मीन की उपज दूसरे देशों के लोग खा लेंगे। तुम अन्धेर सहते
रहोगे और पिसते जाओगे। 34 जो कुछ तुम देखोगे, उस से
पागल हो जाओगे। 35 तुम्हारे सिर से पैर-यहाँ तक कि घुटने
और टाँग ऐसे फोड़ों से भर जाएँगे, कि कभी तुम ठीक ही नहीं
हो पाओगे। 36 तुम्हारा राजा ही तुम्हें ऐसे लोगों के बीच ले
जाएगा, जिसे न तुम और न ही तुम्हारे पूर्वज जानते थे। तुम
लड़की और पत्थर से बनाई गयी मूरतों के सामने झुकोगे।
37 जिन लोगों के बीच तुम खदेड़ दिए जाओगे उन्हीं लोगों में
तुम भयंकर बर्बादी, कहावत और शर्म के कारण बन जाओगे।
38 खेत में तुम बीज तो ढेर सा बोओगे, लेकिन फ़सल कम ही
काटोगे। तुम्हारी फ़सल टिड्डियाँ चट कर जाएँगी। 39 तुम अंगूर
के बगीचे बड़ी मेहनत से लगाओगे, लेकिन तुम अंगूर का रस
न पी सकोगे। उन्हें कीड़े खा जाएँगे। 40 जैतून के पेड़ तुम्हारे
यहाँ होंगे, लेकिन उसके तेल का लाभ तुम न उठा पाओगे,
क्योंकि उसके फल पेड़ से झड़ जाएँगे। 41 तुम्हारे यहाँ पैदा हुए
बेटे-बेटियाँ, गुलामी में चले जाएँगे। 42 तुम्हारे यहाँ के पेड़ों
और भूमि की उपज को टिड्डियाँ चट कर जाएँगी। 43 तुम्हारे
यहाँ रहने वाले परदेशी समृद्ध होते जाएँगे, लेकिन तुम गरीब
होते जाओेगे 44 तुम उन से कर्ज़ लोगे, वे लोग तुम से कर्ज
नहीं मांगेंगे। वह सिर और तुम पूँछ ठहरोगे। 45 ये सारी स
तुम्हारे ऊपर आ पडे़ंगी, जब तक तुम बर्बाद न हो जाओ।
ऐसा इसलिये होगा क्योंकि तुम अपनी मनमानी करने से न
रुके। 46 वे लोग तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिये निशान
और आश्चर्य की बात होंगे।47 सभी कुछ बड़ी तादाद में होने
के बावजूद तुम ने अपने प्रभु परमेश्वर की सेवा खुशी से और
मन से नहीं की।48 इसलिये जिन दुश्मनों को परमेश्वर तुम्हारे
खिलाफ़ भेजेंगे, तुम उनकी भूख,प्यास, नंगेपन और सब चीज़ों
की कमी में सेवा करोगे। वह तुम्हारे ऊपर तब तक बोझ
डालेंगे, जब तक तुम्हें बर्बाद न कर डालें।49 जैसे उकाब तेज़ी

से नीचे आता है,वैसे ही याहवे तुम्हारे खिलाफ़ ऐसे लोगों को ले आएँगे, जिनकी भाषा भी तुम लोग समझते नहीं होगे। 50 ऐसे लोग जिन्हें देखने ही से डर लगता है। वे लोग न ही बूढों की कदर करते हैं और न ही बच्चों पर रहम खाते हैं। 51 वे तुम्हारे मवेशियों के बच्चों और खेती की उपज को तब तक खाएँगे,जब तक तुम्हें बर्बाद न कर डालें। वे लोग तम्हारे लिये अनाज,अंगूर का रस या तेल न छोड़ेंगे।तुम्हारे जानवरों के बच्चे भी वे न छोड़ेंगे। 52 ये लोग तुम्हें तम्हारे फाटकों के अन्दर तब तक घेरे रहेंगे, जब तक तुम्हारे देश में ऊँची और मज़बूत शहरपनाह जिस पर तुम भरोसा रखते हो,ढह न जाये। परमेश्वर ने जो देश तुम्हें दिया है उसके फाटकों के अन्दर तुम्हें घेर लिया जाएगा।53 जब तुम्हारा ददुश्मन घेराबन्दी और परेशानी के ज़रिये तुम्हें पीड़ा देगा। तब तुम अपने बेटे-बेटियों का मांस खाओगे।54 तब तुम्हारे बीच जो कोमल और सुकुमार होगा,वह भी अपने भाई, पत्नी और अपने दूसरे बच्चों को गुस्से से देखेगा।55 यहाँ तक कि उनमें से किसी को अपने बच्चों के मांस के एक टुकड़े का हिस्सा नहीं देगा। जिस घेरेबन्दी और तकलीफ़ से तम्हारा दुश्मन तुम्हारे विरोध में आएगा, वह बहुत होगा।तुम्हारे यहाँ जो कोमल महिला होगी, वह भी अपने बच्चों को खाने में न हिचकिचाएगी। 58 यदि तुम परमेश्वर का कहना न मानो,59 तो याहवे तुम्हें और तुम्हारी औलाद को मरी, बीमारी और न ठीक होने वाली बीमारियों से परेशान कर डालेंगे।60 मिस्र की जिन बीमारियों से तुम डरते हो, वे तुम पर आएँगी।61 जिन बीमारियों के बारे में लिखा भी नहीं है, वे भी तम्हारे बर्बाद होने तक तुम्हारे पीछे लगी रहेंगी।62 अभी आसमान के तारों की तरह तुम लोग बेशुमार हो। लेकिन उस समय परमेश्वर के खिलाफ़ जाने की वजह से तुम लोग थोडे़ से रह जाओगे।63 जिस तरह से प्रभु परमेश्वर तुम्हारी बढ़त और भलाई से खुश होते थे, वैसे ही तुम्हारी बर्बादी से खुश होंगे। जिस देश में तुम बसने वाले हो, तुम उस में से उखाड़ फेंके जाओगे।64 तुम लोग दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक बिखरा दिये जाओगे।वहाँ तुम लकड़ी और पत्थर के देवताओं की पूजा करोगे। इन देवताओं को न ही तुम जानते थे , न तुम्हारे पूर्वज।65 उन लोगों के बीच तुम्हें कोई आराम न मिलेगा। वहाँ याहवे तुम्हें काँपता मन, धुँधली आँखें और घबराहट देंगे।66 तुम्हारी ज़िन्दगी का कोई ठिकाना न होगा। तुम डर से जकड़े रहोगे। तुम्हारे जीवन में से भरोसा जाता रहेगा। 67 जो डर तम्हारे मन में घर कर चुका है,और जो कुछ भी तुम देख सकते हो, उसके कारण तुम कहोगे,'शाम कब होगी' और शाम को कहोगे, 'सुबह कब होगी।' 68 याहवे तुम्हें जहाजों पर चढ़ाकर उस रास्ते से मिस्र में वापस लौटा लाएँगे, जिसे फिर कभी देख न पाओगे। वहाँ तुम अपने- अपने दुश्मनों के सामने गुलाम होने के लिये बिकने को खड़े हो जाओगे,लेकिन तुम्हें कोई न खरीदेगा।

29 [1] होरेब पहाड़ पर परमेश्वर याहवे ने एक वाचा इस्राएलियों से बाँधी थी। दूसरी वाचा की बातें ये हैं, जिन्हें याहवे ने मूसा को आदेश दिया था, कि मोआब देश में बाँधे। [2] सभी इस्राएलियों को मूसा ने अपने पास बुलाकर कहा, "जो कुछ याहवे ने मिस्र देश में फ़िरौन, उसके सभी कार्यकर्ताओं और पूरे देश के साथ किया था, तुम ने अपनी आँखो से देखा। [3] तुम ने बड़ी परीक्षाओं, बड़े निशान तथा अद्‌भुत कामों को भी देखा था [4] ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने तुम्हें न तो समझने का मन, न देखने वाली आँखें और न ही कान दिए हैं। [5] चालीस साल तक मैं तुम्हें जंगल में लेकर घूमा। उस समय तुम्हारे पहनने के कपड़े फटे नहीं, न ही जूतियाँ घिसी। [6] तुम जो खाना नहीं खा सके और जो दाखमधु तथा मदिरा न पी सके, वह सब इसलिए हुआ ताकि तुम यह जान लो कि मैं ही तुम्हारा याहवे परमेश्वर हूँ। [7] तुम लोग जब इस जगह पर आए थे, तब हेशबोन का राजा, सीहोन एवं बाशान का राजा आगे हमसे लड़ने आ गए थे। लेकिन हम लोगों ने उन सभी को हरा दिया था [8] उन के देश को लेकर रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र को उन सब की मीरास होने के लिए दे दिया। [9] इसलिए इन बातों को मानने में सावधानी बरतना, जिससे तुम अपने कामों में कामयाबी हासिल करो। [10] "आज तुम्हारे परमेश्वर के सामने तुम्हारे प्रधान, गोत्र, तुम्हारे बुज़ुर्ग तथा तुम्हारे अधिकारी, यहाँ तक कि सारे इस्राएली पुरूष, [11] तुम्हारे बच्चे, पत्नियाँ, तुम्हारे सिवाने के भीतर रहने वाले परदेशी, तुम्हारे लकड़हारे और पनहारे तक सभी इसलिए खड़े हो जाएँ, [12] कि अपने परमेश्वर याहवे के साथ उस वाचा में तथा उसकी उस शपथ में सहभागी हो सको, जो तुम्हारे परमेश्वर याहवे आज तुम्हारे साथ बना रहे हैं; [13] जिससे कि अपने उन शब्दों के अनुसार जो उन्हों ने तुम से कहे और अपने उस वायदे के अनुसार जो उन्हों ने तुम्हारे पूर्वजों - अब्राहम, इसहाक तथा याकूब से किया था, वह तुम्हें आज अपने लोग ठहराएँ और वह तुम्हारे परमेश्वर ठहरें। [14] मैं जो वाचा तुम से आज बाँध रहा हूँ और प्रतिज्ञा कर रहा हूँ, वह केवल तुम लोगों से ही सम्बन्ध नहीं रखती है, [15] लेकिन उन के साथ भी जो यहाँ हैं या नहीं हैं। [16] तुम्हें मालूम है कि मिस्र में हमारी स्थिति क्या थी, तथा जिन-जिन देशों से होकर तुम्हें आना था, उन में से पार होकर हम किस तरह आ गए। [17] तुम ने उनकी घिनौनी चीजों-लकड़ी, पत्थर, चाँदी और सोने की मूर्तियों को भी देखा था। [18] तुम में से किसी आदमी या औरत, परिवार या गोत्र का मन हमारे परमेश्वर याहवे

से मुकर न जाए। परिणामस्वरूप वह दूसरे देशों के देवताओं
की पूजा करे। ऐसा न हो कि तुम्हारे बीच कोई ऐसी जड़ हो
जो जहरीला फल तथा नागदौना पैदा करे। 19 ऐसा इन्सान
जब शाप की इन बातों को सुनेगा, तो यह सोचकर अपने को
आशीषित समझेगा, कि हालांकि मैं अपने ज़िद्दी के अनुसार
जीवन जीऊँ, शान्ति कायम रहेगी। ऐसे विचार से दोनों तरह
की ज़मीन-सींची हुयी और बिना सींची हुयी ज़मीन बर्बाद
हो जाएगी। 20 परमेश्वर ऐसे इन्सान को कभी-भी माफ़ नहीं
करेंगे। याहवे परमेश्वर का गुस्सा ऐसे मनुष्य पर आएगा और
लिखी हुयी सज़ा उस पर आएगी। उसका नाम याहवे आसमान
के नीचे से मिटा देंगे। 21 वाचा के सभी शापों के अनुसार,
मुसीबतों के लिए इस्राएल के सभी गोत्रों में से अलग करेंगे।
22 "इसकी वजह से आने वाले पीढ़ी तथा दूर देश से आने वाला
परदेशी तुम्हारी मुसीबतों और बीमारियों को देखकर कहेंगे,
23 कि इस देश की पूरी ज़मीन गन्धक और नमक हो गई है।
इसके बंजर हो जाने से यहाँ कुछ भी बोना बेकार है। यह भूमि
सदोम-अमोरा और तथा अदमा-सेबायीम की तरह हो गयी
है जिसे परमेश्वर ने अपने गुस्से में आकर बर्बाद कर डाला
था। 24 तब सभी देश कहेंगे, 'इस राष्ट्र के साथ याहवे ने ऐसा
क्यों किया? यह गुस्सा क्यों?' 25 तब सभी लोग उत्तर देंगे,
'इन सभी घटनाओं का कारण यह था कि मिस्र की गुलामी
से उन्हें निकालते समय उन के पूर्वजों के परमेश्वर याहवे ने
जिस वाचा को उन के साथ बाँधा था, उन लोगों ने उसे तोड़
दिया 26 उन लोगों ने दूसरों के देवताओं की सेवा और पूजा
की, हाँ, ऐसे देवताओं की, जिन्हें वे पहले नहीं जानते थे और
परमेश्वर की और से उनकी पूजा की मनाही थी। 27 इसलिए
याहवे आग बबूले हो गए, और इस किताब में लिखा हर एक
शाप इन लोगों पर आया, 28 याहवे ने गुस्से, जलजलाहट तथा
बहुत गुस्से में उनको उन के देश से उखाड़ा और दूसरे देश में
फेंक दिया, जैसा आज दिख रहा है। 29 छुपी हुयी बातें याहवे
परमेश्वर के हाथ में है, लेकिन जो बातें हम पर प्रगट हुयी हैं,
वे सदाकाल के लिए हमारे तथा हमारी आने वाली पीढ़ियों के
लिए हैं, कि हम इस नियमशास्त्र की सभी बातों को मानें।

30 1 तमाम देशों के बीच रहते हुए जब आशीष-शाप
तुम्हारे ऊपर आएँ और तुम्हें वहाँ वे बातें याद
आएँ। 2 तब जब तुम अपने बच्चों समेत परमेश्वर याहवे की
ओर मुड़ो, और आज जिन बातों की आज्ञा दे रहा हूँ, उन्हें
तन-मन से सुनो, 3 तो तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें गुलामी से वापस
लौटा लाएँगे। परमेश्वर तुम पर दया करेंगे और जिन देशों
में उन्हों ने तुम्हें बिखेर दिया है, वहाँ से इकट्ठा करेंगे। 4 यदि
ये गुलामी में ले जाए गए लोग दुनिया के अन्त तक भी ले
जाए गए होंगे, तो परमेश्वर वहाँ से इकट्ठा करके वापस ले
आएँगे। 5 परमेश्वर तुम्हें उस देश में ले आएँगे, जो तुम्हारे
पूर्वजों के वश में था। तुम उसे अपने वश में कर लोगे। तुम्हें
तुम्हारे पूर्वजों से अधिक बढ़त मिलेगी, तथा संख्या में तुम बढ़
जाओगे 6 परमेश्वर याहवे तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के मन
की कड़ी परत को हटाएँगे। इस कारण तुम अपने मन और
प्राण से प्रेम करते हुए जी सकोगे। 7 तुम्हारे परमेश्वर याहवे ये
सभी सज़ाएँ तुम्हारे दुश्मनों, सताने वालों तथा नफ़रत करने
वालों पर डालेंगे। 8 तब तुम याहवे की सुनोगे और उन बातों
को मानोगे, जो मैं तुम्हें आज कह रहा हूँ। 9 तुम्हारी मेहनत
पर परमेश्वर का हाथ रहेगा। तुम्हारे बाल-बच्चों, मवेशियों
तथा फ़सल में बढ़त रहेगी। याहवे को तुम्हारी भलाई करने में
वैसे ही खुशी मिलेगी, जैसी पूर्वजों को आशीष देने में मिला
करती थी। 10 ऐसा तभी हो सकेगा, जब तुम अपने परमेश्वर
याहवे की सुनकर उन्हीं की माना और पूरी तरह से उन्हीं की
ओर मुड़ जाओ 11 "ये दी गयी आज्ञाएँ आसान हैं और समझी
भी जा सकती हैं। 12 ये आशाएँ स्वर्ग में नहीं हैं कि तुम कहने
लगो, "स्वर्ग जाकर इन्हें कौन लाएगा और सुनाएगा ताकि
हम वैसा ही करें?" 13 ये आदेश समुन्दर पार भी नहीं है, कि
तुम कहो, समुन्दर पार कर कौन जाएगा और वापस लाएगा,
ताकि हम उन्हें माना करें। 14 ये आज्ञाएँ तो तुम्हारे पास यहाँ
तक कि तुम्हारे मुँह और मन में हैं। 15 "देखो, आज मैंने तुम्हारे
सामने ज़िन्दगी-बहुतायत, मौत और मुसीबत सभी रख दी
हैं। 16 मैं तुम्हें यह आज्ञा दे रहा हूँ कि तुम अपने परमेश्वर
याहवे से प्रेम रखना, उन के रास्तों पर चलना। तुम उनकी
आज्ञाओं, नियमों और विधियों का पालन करना। ऐसा करने
से तुम जीवित रहने के साथ, फूलो फलोगे। याहवे परमेश्वर
उस देश में तुम्हें आशीष दें, जिसे अपना कर लेने के लिए तुम
दाखिल होने वाले हो। 17 लेकिन यदि तुम रास्ते से भटक
जाओ, और आज्ञाएँ न मानो और दूसरों के देवी-देवताओं की
पूजा पाठ करने लगो, 18 तो तुम अवश्य बर्बाद हो जाओगे।
तुम जिस प्रतिज्ञा किए यर्दन पार देश में जाकर रहने वाले हो,
वहाँ अधिक दिन न रह पाओगे। 19 आज मै स्वर्ग और पृथ्वी
को तुम्हारे सामने गवाह करके रखता हूँ कि मैंने तुम्हारे सामने
ज़िन्दगी और मौत, आशीष तथा शाप रखा है। इसलिए जीवन
का चुनाव कर लो ताकि अपने बाल-बच्चों सहित जीवित रहो।
20 अपने याहवे परमेश्वर से प्रेम रखना, उनकी सुनना क्योंकि
यही तुम्हारे लिए जीवन और तुम्हारे लिए लम्बी आयु है कि
जिस देश का वायदा अब्राहम, याकूब और याकूब से किया
गया था, उसमें तुम रह सको।

31 1 इसलिए मूसा गया और उस ने ये सभी बातें
इस्राएलियों को बतलायीं। 2 वह बोला, 'मेरी उम्र
एक सौ बीस साल की हो गयी है। मेरा चलना-फिरना मुश्किल
हो गया है। मुझे परमेश्वर इस यर्दन नदी को पार नहीं करने
देंगे। 3 परमेश्वर तुम्हारी अगुवाई करते हुए यर्दन नदी को
पार कराएँगे और अनेक देशों को तुम्हारे देखते-देखते नाश
करेंगे। उन के देश को तुम अपने कब्जे में कर लोगे। याहवे के
कहने के अनुसार यहोशू तुम सब लोगों के आगे-आगे होगा।
4 याहवे परमेश्वर वहाँ के रहने वालों के साथ वैसा व्यवहार
ही करेंगे जैसा एमोरियों के राजाओं सीहोन तथा ओग तथा
उन के देश के साथ किया था। 5 उन्हें याहवे के द्वारा तुम्हारे
हाथ में सुपुर्द कर दिया जाएगा। उन के साथ तुम वैसा ही
बर्ताव करना जैसी आज्ञा मैंने तुम्हें दी है। 6 हिम्मत रखो,
मजबूत रहो। उन से डरना नहीं, क्योंकि तुम्हारे साथ रहने
वाले परमेश्वर याहवे हैं। वह तुम्हें न छोड़ेंगे। 7 मूसा ने यहोशू
को सभी इस्राएलियों के सामने से कहा, "हिम्मत बाँधो और
मजबूत बने रहो, क्योंकि तुम ही इन लोगों के साथ उस देश
को जाओगे जिसे देने का वायदा, याहवे ने पूर्वजों से किया
था। तुम ही विरासत में उनको दे सकोगे। 8 याहवे खुद तुम्हारे
आगे-आगे जाएँगे और तुम्हारे साथ रहेंगे। वह तुम्हें न धोखा
देंगे और न ही छोड़ेंगे। इसलिए डरो मत और हिम्मत न हारो"
9 इसलिए मूसा ने यह लिखकर याहवे की वाचा के बक्से को
उठाने वाले लेवीय पुरोहितों तथा इस्राएल के सभी प्राचीनों
को सौंप दी। 10 फिर मूसा ने उन्हें यह आदेश दिया "हर सात
साल के आखिर में, अर्थात् कर्ज माफ़ी के साल में झोपड़ियों
के त्यौहार के समय, 11 जब सारे इस्राएली अपने परमेश्वर
अपने परमेश्वर याहवे के सामने मौजूद होने के लिए उस
जगह आएँ, जिसे वह चुन लेंगे, तब तुम पूरे इस्राएल के सामने
उन के सुनते इन नियमों आज्ञाओं को पढ़कर सुनाना। 12 सभी
आदमियों, औरतों, बच्चों तथा अपने फाटकों के अन्दर रहने
वाले को इकट्ठा करना। उन्हें सिखाना कि वे परमेश्वर से डरें
और दिए गए निर्देशों का पालन करने में सावधानी बरतें।
13 उन के अबोध बच्चे भी प्रतिज्ञा किए हुए देश में परमेश्वर
का आदर सम्मान करना सीखें। 14 तब याहवे परमेश्वर मूसा
से बोले, "देखो, तुम अधिक दिन जीवित नहीं रहोगे। इसलिए
यहोशू को बुलवाओ और तुम दोनों मिलाप वाले तम्बू में
हाजिर होना ताकि मैं जिम्मेंदारी उसके हाथ में सौंप सकूँ।"
यहोशू और मूसा ने वैसा ही किया। 15 तब याहवे बादल के
खम्भे में होकर तम्बू में प्रगट हुए और बादल का खम्भा तम्बू के
दरवाज़े पर ठहरा रहा। 16 याहवे ने मूसा से कहा, देखो, तुम
अपने बापदादों के साथ सो जाने पर हो। लेकिन ये लोग जिस
देश में जाने वाले हैं, वहाँ के देवी-देवताओं की पूजापाठ करेंगे।
वे मुझे छोड़ देंगे और मेरी बाँधी हुयी वाचा को तोड़ देंगे।
17 तब मेरा गुस्सा भड़केगा और मैं उन्हें छोड़ दूँगा। मैं अपना
चेहरा उन से छिपा लूँगा और वे भस्म हो जाएँगे। उन के आए
बहुत सी मुसीबतें भी आ पड़ेंगी। उस समय वे कहेंगे, 'क्या
यह इसलिए नदी हो रहा है कि हमारे परमेश्वर हमारे बीच
नहीं है? 18 उस दिन मैं उन सभी बुराईयों के कारण जो ये
लोग देवी-देवताओं की ओर मुड़कर करेंगे अपना चेहरा छिपा
लूँगा 19 इसलिए तुम यह गीत अपने लिए लिख लो और सभी
इस्राएलियों को याद करा देना, जिससे यह गीत इस्राएलियों
के विरोध में मेरा गवाह ठहरे। 20 बहुतायत का देश जिसको
देने की मैंने प्रतिज्ञा की थी, वहाँ पहुँचकर, हष्ट-पुष्ट होकर दूसरे
देवताओं की ओर मुड़कर उनकी सेवा करेंगे। वे मुझे ठुकरा देंगे
और मेरी वाचा तोड़ डालेगे। 21 जब उन पर बहुत परेशानियाँ
और समस्याएँ आ पड़ेंगी, तब यह जीत एक गवाह की तरह
होगा। उनकी सन्तान के मुँह से यह सदैव सुना जाएगा। मुझे
यह मालूम है अभी वहाँ पहुँचने से पहले उन के मन में कौन सी
बाते हैं। 22 इसलिए मूसा ने यह गीत लिखा और इस्राएलियों
को सिखा भी दिया। 23 इसके बाद याहवे परमेश्वर ने नून
के बेटे यहोशू पर ज़िम्मेंदारी सौंपते हुए कहा, "हिम्मत रखो
और स्थिर बने रहना, क्योंकि तुम इस्राएलियों को उस देश में
पहुँचाओगे, जिसका वायदा मैंने उन से किया था। हाँ मैं तुम्हारे
साथ भी रहूँगा।" 24 इन सब वचनों को किताब में लिख लेने
के बाद, 25 मूसा ने याहवे की वाचा का सन्दूक उठाने वाले
लेवियों को आदेश दिया, 26 "व्यवस्था (नियमशास्त्र) की यह
किताब को ले जाओ और अपने परमेश्वर याहवे की वाचा के
सन्दूक के पास रखो, कि वह वहाँ तुम्हारे विरूद्ध गवाह हो।
27 क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग बलवई और ज़िद्दी हो।
आज जब मैं जीवित हूँ तभी तुम विद्रोह कर रहे हो, तो मेरे
मरने के बाद कितना करोगे? 28 अपने गोत्रों के सब प्राचीनों
तथा अपने अधिकारियों को मेरे पास लाओ। मैं उन्हें ये बातें
बतलाऊँगा तथा आसमान और ज़मीन को उन के खिलाफ़
गवाह ठहराऊँगा। 29 मुझे मालूम है कि मेरे मरने के बाद तुम
गंदा जीवन जीओगे। जिस रास्ते पर चलने की आज्ञा मैंने दी
है उस से भटक जाओगे। परिणामस्वरूप तुम्हें दुख भोगना
पड़ेगा, क्योंकि जो याहवे के सामने बुरा है, तुम वही करोगे।
अपने कर्मों से तुम परमेश्वर को नाराज़ करोगे" 30 तब मूसा ने
सारी सभा के सभी लोगों को शुरू से आखिर तक इस गीत के
शब्द सुना दिए।

32 1 "हे आसमान, सुनो और पृथ्वी मेरे मुँह की बातों
को सुनो। 2 बरसात की तरह मेरी शिक्षा बरसे, मेरी
बातें ओस की तरह टपकें, उसी तरह जिस तरह हरी घास पर

फुहार और पौधों पर बौछार। 3 मैं याहवे के नाम का ऐलान
करता हूँ, हमारे परमेश्वर की लड़ाई करो! 4 वही चट्टान हैं
और उन के काम खरे हैं। उन के सभी रास्ते इन्साफ़ वाले हैं।
उन पर भरोसा रखा जा सकता है उनमें किसी तरह की बुराई
नही हैं। वह धर्मी और खरे हैं। 5 उन के प्रति इस्राएलियों का
बर्ताव सही नहीं रहा है। अपनी गलती की वजह से ये लोग
उनकी औलाद नही हैं। ये लोग भ्रष्ट और टेढ़ी पीढ़ी के लोग
हैं। 6 हे बेवकूफ़ और बेअक्ल लोगो, तुम क्या इसी तरह से
परमेश्वर के साथ पेश आते हो? क्या वह तुम्हारे पिता नहीं हैं,
जिन्होंने तुम्हें दाम देकर खरीदा हैं? तुम को उन्हीं ने बनाया है
और स्थिर भी किया है। 7 पुराने समय को याद करो, बीते गए
सालों को याद करो। तुम अपने पिताजी से पूछो, वही तुम्हें
बताएँगे। वही अपने बुज़ुर्गों (प्राचीनों) से तुम्हें बतलाएँगे।
8 जब परमप्रधान ने तमाम देशों को उनकी विरासत दी, और
इन्सान को अलग किया, उन्हों ने इस्राएलियों की गिनती के
अनुसार देशों की सरहद ठहराई। 9 क्योंकि याहवे का स्वयं
का भाग उनकी प्रजा है, याकूब उनकी मीरास का ठहराया
हुआ हिस्सा है। 10 उन्हों ने उसे जंगल में जहाँ जानवरों की
भयंकर आवाज़ गूँजती है, पाया। उसके चारों ओर रह कर
उन्हों ने उसे सम्भाला। अपने आँख की पुतली की तरह उसे
सुरक्षा दी। 11 जिस तरह उकाब अपने घोंसले को हिलाता
और अपने बच्चों के ऊपर डोलता रहता है, वैसे ही परमेश्वर
ने अपने लोगों को मानो पंख फैलाकर सम्भाला और अपने
परों पर बैठाया। 12 उनका मार्गदर्शन याहवे ही ने किया। उस
समय उन के साथ और कोई पराया देवता नहीं था। 13 पृथ्वी
की ऊँची जगहों पर उन्हों ने उसे सवार कराया, उसे उन्हों ने
खेतों की फ़सल खिलाई, चट्टान में से उन्हों ने उन लोगों को
शहद खिलाया। यहाँ तक कि चकमक की चट्टान में से तेल
भी चुराया। 14 तुम ने गायों का दही, भेड़-बकरियों का दूध,
मेमनों की चर्बी, बाशान नस्ल के मेंढ़ें, बकरों, सब से बढ़िया
गेहूँ और अंगूरों के रस का सेवन किया 15 लेकिन यशरून मोटा
होकर लातें चलाने लगा है। तुम मोटे और हष्ट-पुष्ट हो गए हो।
तब उस ने अपने बनाने वाले परमेश्वर को छोड़ दिया, तथा
अपने मुक्ति की चट्टान को तुच्छ समझा। 16 उन्हों ने दूसरों के
देवताओं की उपासना करके परमेश्वर में ईर्ष्या उत्पन्न की।
उन लोगों ने घिनौनी चीजों से परमेश्वर के गुस्से को भड़का
दिया 17 पिशाचों के लिए और देवताओं के लिए तुम ने कुर्बानी
चढ़ायी। तुम्हारे पूर्वज तक इन लोगों को नहीं मानते थे।
18 जिस चट्टान ने तुम्हें पैदा किया, उसी को तुम ने ठुकराया,
जिस परमेश्वर ने तुम्हें जन्म दिया, उसी को तुम भूल गए।
19 याहवे ने यह सब देखकर उन्हें ठुकरा दिया, क्योंकि उन के
बेटे-बेटियों ने उन्हें आग बबूला कर दिया था। 20 तब परमेश्वर
ने कहा कि मैं अपना मुँह उन से फेर लूँगा और उनकी बर्बादी
देखूँगा। ये लोग गुमराह पीढ़ी के लोग हैं, हाँ विश्वासघाती भी
है। 21 जो ईश्वर नहीं है, उसकी इबादत करके इन लोगों ने मेरे
मन में जलन पैदा की। अपनी बनाई हुई मूर्तियों से उन्हों ने
मेरे गुस्से को भड़का दिया इसलिए जो मेरे लोग नहीं हैं, उन
के द्वारा मैं इन में ईर्ष्या पैदा करूँगा तथा एक बेवकूफ़ देश के
लोगों के द्वारा इन का गुस्सा भड़काऊँगा। 22 क्योंकि मेरे गुस्से
की आग भड़क चुकी है तथा अधोलोक की तह तक जलती है,
और प्राणी को उसकी फ़सल के साथ भस्मी करती हैं, तथा
पहाड़ों की नीवों में आग लगा देती हैं। 23 मैं उन के ऊपर
मुसीबत पर मुसीबत भेजूँगा। अपने तीर मैं उन पर छोड़ूँगा।
24 वे लोग अकाल से बर्बाद हो जाएँगे, तेज गर्मी और भयंकर
बर्बादी से उनका अन्त हो जाएगा। उन पर मैं जानवरों के दाँत
और ज़मीन में रेंगनेवाले जानवरों का जहर भेजूँगा। 25 वे लोग
बाहर तलवार से मर जाएँगे और अन्दर डर से - कुवाँरा और
कुवाँरी दोनों, दूध पीता बच्चा और सफ़ेद बाल वाला इन्सान।
26 मैं यह कहने ही वाला था कि मैं उन के टुकड़े-टुकड़े कर
डालूँगा। मैं मनुष्यों के बीच में से उनका नामों-निशान मिटा
दूँगा। 27 मुझे यह डर था दुश्मन भड़क उठेगा। यह भी कि
विरोधी यह गलत मतलब न लगा ले, कि हम जीत गए हैं।
और यह कि यह सब परमेश्वर का काम नहीं है। 28 ये लोग
बड़े अजीब हैं, उन में समझ नाम की चीज़ नहीं। 29 अच्छा
होता यदि वे समझदार होते और जीवन के अन्त के बारे में
ज्ञान रखते 30 यदि उनकी चट्टान (परमेश्वर) ही ने उनको बेचा
न होता या याहवे ही ने उन लोगों को छोड़ न दिया होता, तो
एक जन उन के एक हज़ार का पीछा कैसे करता? या दो जन
उन के दस हज़ार को कैसे खदेड़ पाते? 31 सचमुच में उनकी
चट्टान हमारी चट्टान की तरह नहीं है, चाहे हमारे दुश्मन ही
जज क्यों न हों। 32 उनकी अंगूर की लता सदोम की अंगूर की
लता में से है, तथा अमोरा के खेतों में से हैं उन के अंगूर ज़हर
भरे और गुच्छे कड़वे हैं। 33 उनकी शराब सांपों का जहर और
नाग का हलाहल है। 34 क्या यह मेरे भण्डार में इकट्ठा किया
हुआ और मेरे खजानों में मुहरबन्द नहीं है? 35 बदला लेना
और देना मेरे हाथ में है। एक सही समय पर उन के पैर फिसल
जाएँगे। उनकी मुसीबत का समय पास में है। जो परेशानी उन
पर आनेवाली है, वह जल्दी ही आएगी। 36 जब याहवे को
दिखेगा कि उनकी ताकत समाप्त होने वाली है और यह भी
कि कोई गुलाम और आजाद बचा नही, तब वह अपने लोगों
का इन्साफ़ करेंगे और अपने दासों पर दया दिखाएँगे। 37 तब
वह कहेंगे, 'कहाँ रहे उन के देवता और वह चट्टान जिस में वे
शरण लेते थे? 38 उनकी चढ़ायी गयी कुर्बानी की चर्बी को
किसने खाया? उन के तपावन की शराब को किसने पिया है?

ये ही उठें और तुम्हारी मदद करें। उन्हीं की शरण में तुम वास
करो। 39 देखो, मैं, हाँ, मैं ही वह हूँ। मुझ को छोड़कर कोई और
परमेश्वर नहीं है। मौत और जिन्दगी मैं ही देता हूँ। जख्म मैंने
दिए है और स्वस्थ भी मैं करूँगा। किसी में हिम्मत नहीं, कि
मेरे हाथ से छुड़ा ले। 40 निश्चित रीति से मैं अपना हाथ ऊपर
उठाकर कहता हूँ, 41 यदि मैं अपनी तेज तलवार पर साव
चढ़ा लूँ और इन्साफ़ को अपने हाथों में ले लूँ। मैं अपने दुश्मनों
और विरोधियों से बदला लूँगा। 42 अपने तीरों को मैं खून से
मतवाला करूँगा। मेरी तलवार मांस खाएगी। वह खून मारे
गए तथा कैदियों का और वह मांस दुश्मनों के लम्बे बाल वाले
प्रधानों का सा होगा। 43 हे देश-देश के लोगो, याहवे की प्रजा
के साथ खुश हो, क्योंकि वह अपने दासों के खून का बदला
लेंगे। अपनी खिलाफ़त करने वालों से बदला लेंगे।”

33 1 अपनी मौत से पहले परमेश्वर के जन मूसा ने
जो आशीर्वाद इस्राएलियों को दिया है, वह यह है:
2 वह बोला, "याहवे सीनै पहाड़ से आए और सेईर से उन के
लिए निकले। पारान पहाड़ पर उन्हों ने अपना तेज दिखाया
और लाखों पवित्रों के बीच में से आए। उन के दाहिने हाथ से
लोगों के लिए अग्निमय आदेश मिले। 3 वह सभी देशों के लोगों
से प्यार करते हैं। सभी अलग किए हुए (पवित्र) लोग आपके
हाथ में हैं। आपके चरणों पर ही वे बैठे रहते हैं। आपके मुँह से
निकली बातों से सभी फ़ायदा होता है। 4 मूसा के द्वारा ही
नियम-आज्ञाएँ दिए गए। याकूब की मण्डली का वह हिस्सा
ठहरी। 6 "रूबेन ज़िन्दा रहे, फिर भी उसके यहाँ के लोग कम
हों।" 7 यहूदा के लिए यह आशीर्वाद था, "हे याहवे, आप
यहूदा की सुनें और उसे उसके लोगों के पास पहुँचा दें। अपने
हाथों से वह खुद के लिए लड़ा और आप ही उसके दुश्मनों के
खिलाफ़ मददगार हो" 8 लेवी के बारे में उस ने कहा, "तुम्हारे
तुम्मीम-अरीम तुम्हारे भक्त के पास रहें। परमेश्वर को तुम ने
मस्सा में परखा और मरीबा के सोते पर झगड़ा फसाद किया
था 9 उस ने अपने माता-पिता के बारे में कहा, 'मैं उन्हें जानता
ही नहीं हूँ।' अपने भाइयों को भी उस ने अपना नहीं कहा,
अपने बेटों को भी उस ने इज्ज़त नहीं दी उन्हों ने आपकी बातों
को माना और वाचा को बनाए रखा 10 याकूब को वे आपके
नियम सिखाएँगे। इस्राएल को आपके नियम-आज्ञाएँ। आपके
आगे वे लोग धूप जलाएँगे, आपकी वेदी पर पूरे जानवर का
होमबलि चढ़ाएँगे। 11 हे याहवे, उनकी दौलत पर आपका
आशीर्वाद हो तथा उनके हाथों के कामों को स्वीकार करें।
उनकी खिलाफ़त करने वाले और दुश्मनों की कमर इस तरह
तोड़ें, कि उठ ही न पाएँ।" 12 बिन्यामीन के बारे में कहा गया,
"याहवे का प्रिय जन उन के पास सुरक्षित रहें, जो उसे दिन
भर ढाँके रखते हैं, तथा वह याहवे के कंधो के बीच रहता है
13 यूसुफ़ के बारे में उस ने कहा, "याहवे उसके देश को हर तरह
से समृद्ध करें, स्वर्ग (आकाश) की सब से बढ़िया चीजों, ओस
एवं गरहे पानी से 14 सूरज से पोषित उपज से तथा मौसम की
सर्वोत्तम उपज से 15 पुराने समय के पहाड़ों की सब से बढ़िया
वस्तुओं से, तथा सद्यकाल की पहाड़ियों की बढ़िया वस्तुओं
से, 16 इस पृथ्वी की सब से बढ़िया चीजों की बहुतायत उसे
प्राप्त हो झाड़ियों में निवास करने वाले की दया से उसे यूसुफ़
के सिर अर्थात् उसके सिर के चांद पर, जो अपने भाइयों में
प्यार ठहरा है, आशीर्वाद ही आशीर्वाद हो। 17 उसकी शान
पहलौठे सांड़ की तरह है। उसके सींग जंगली सांड़ के सींग हैं,
वह तमाम राष्ट्रों के लोगों को एक साथ पृथ्वी के अन्त तक
ढकेल देगा। एप्रैम के लाखों लोग इस तरह के हैं और मनश्शे
के हज़ार भी।" 18 जबूलून के बारे में उस ने कहा, "हे जबूलून
अपनी यात्रा शुरू करने में और हे इस्साकार, तुम अपने तम्बू
में खुश हो। 19 देश-देश के लोगों को वे पहाड़ पर बुलाएँगे।
वे वहाँ पर बलिदान चढ़ाएँगे। समुन्दर की समृद्धि और बालू
में छुपी हुई दौलत को वे ढूँढ लेंगे। 20 गाद के बारे में उस ने
कहा, "वह धन्य है जो गाद का विकास और उन्नति करता है।
वह सिंहनी की तरह दुबक कर रहता है। वह हाथ और सिर,
दोनों को फाड़ डालता है। 21 उस ने पहला हिस्सा अपने लिए
चुना, क्योंकि वहाँ राजा का हिस्सा सुरक्षित था। वह प्रजा
के प्रधानों के साथ मिला और उस ने याहवे के इन्साफ़ तथा
नियमों को इस्राएल पर लागू किया।" 22 दान के बारे में उस ने
कहा, "दान तो शेर का बच्चा है, वह बाशान से टूट पड़ता है।"
23 नप्ताली के बारे में उस ने कहा, "हे नप्ताली, तुम याहवे की
कृपा और आशीषों से ढके हो, समुन्दर और दक्षिण को अपने
वश में कर लो। 24 आशेर के विषय कहा गया, "आशेर दूसरे
बेटों से ज़्यादा आशीषित हो, उस पर अपने भाइयों की कृपा
हो और वह अपना पाँव तेल में डुबोए। 25 तुम्हारे बेड़े लोहे
और कांसे के बने हों, तथा तुम्हारे आखिरी दिनों के अनुसार
तुम्हें सुख-चैन हासिल हो 26 "अशरून के परमेश्वर की तरह
दूसरा कोई नहीं है। वह तुम्हारी मदद के लिए आसमान
पर तथा अपनी महानता में बादलों पर सवारी करते हैं।
27 सनातन के परमेश्वर शरण लेने के लिए जगह हैं, और नीचे
सदा काल की भुजाएँ। वह दुश्मनों को तुम्हारे देखते-देखते
खदेड़ देते हैं। वह कहते हैं, 'पूरी तरह बर्बाद कर डालो।'
28 इसलिए अनाज और नए दाखरस के देश में इस्राएल बिना
डर के, वरन याकूब का स्रोत सुरक्षित रहता है। उसके ऊपर
के आसमान से ओस गिरती है। 29 हे इस्राएल, तुम आशीषित
हो। हे याहवे से मुक्ति पाई हुई प्रजा तुम्हारे समान कौन है?
वह तो तुम्हारी मदद के लिए ढाल तथा तुम्हारे प्रताप की

तलवार है। इसलिए तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी बड़ाई करेंगे और तुम उन के ऊँचे स्थानों को रौंदोगे।"

34 [1] तब मूसा मोआब की तराई से नबो पहाड़ की पिसगा चोटी पर जो यरीहो के सामने है, चढ़ गया। वहीं से परमेश्वर ने उसे पूरा देश दिखाया। [2] दान तक का गिलाद, पूरा नप्ताली, एप्रैम व मनश्शे का हिस्सा पश्चिम समुन्दर तक यहूदा का पूरा भाग, [3] नेगेव और खजूर वाले नगर तक। [4] तब याहवे ने उस से कहा, "यह वही देश है, जिस के बारे में अब्राहम,इसहाक और याकूब से यह वायदा किया था, कि मैं इसे तुम्हारे वंश को दूँगा। मैंने इसे तुम्हें दिखा तो दिया है, लेकिन तुम वहाँ जा न पाओगे।" [5] इसलिये मूसा वहीं मोआब में खतम हो गया। [6] वहीं बेत- पोर के सामने मोआब देश की तराई में परमेश्वर ने उसे दफ़ना दिया। किसी को इस बात का पता नहीं चला। [7] उस समय मूसा की उम्र एक सौ बीस साल थी, लेकिन उसकी ताकत कम नहीं हुई और न ही आँखों की रोशनी कम हुई। [8] मोआब के मैदान में इस्राएली तीस दिन तक रोते रहे। [9] नून का बेटा यहोशू बुद्धि से भरा हुआ था। मूसा ने उसकी जगह लेने के लिये यहोशू को अलग किया था।इस्राएलियों ने उसकी सुनी और उसी के मुताबिक किया भी। [10] उस समय से मूसा की तरह इस्राएल में कोई और नबी न हुआ, जिस से परमेश्वर आमने सामने बातचीत करते हों [11] याहवे ने उसी को मिस्र देश में फ़िरौन, उसके सभी कार्यकर्ताओं के सामने चिन्ह और अजीब काम कर दिखाये। [12] मूसा ने पूर इस्राएल की आँखों के सामने शक्ति और डर के बड़े-बड़े काम दिखाए।